शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 11 | उदयपुर बुधवार 15 जून 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

प्रताप ने त्याग और बलिदान के साथ शासन व सम्मान को सुरक्षित रखा : राजनाथसिंह

प्रताप के आदर्शों पर स्वाभिमानी और समृद्ध राजस्थान बनायेंगे : वसुंधरा राजे

आयड़ को विश्व की सबसे सुंदर नदी बनायेंगे : कटारिया

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। महाराणा प्रताप की 475वीं जयंती के उपलक्ष्य में केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह तथा राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया ने उदयपुर जिले की गोगुंदा तहसील में महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने मुख्यमंत्री के आग्रह पर राजस्थान में महाराणा प्रताप के नाम पर नई इंडिया रिजर्व बटालियन स्थापित करने की घोषणा की। उन्होंने श्रीमती राजे के अनुरोध पर ही जोधपुर के सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय में ग्लोबल सेन्टर फॉर काउंटर टेरेरिज्म की स्थापना तथा पुलिस आधुनिकीकरण के कार्य को गति देने की घोषणा की।

राजनाथसिंह ने कहा कि महाराणा प्रताप ने त्याग और बलिदान के साथ अपने शासन और सम्मान को सुरक्षित रखा और कभी भी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की। भारत सरकार महाराणा प्रताप के योगदान को इतिहास में कभी भी कम नहीं होने देगी। हमारा प्रयास रहेगा कि लोगों की जुबां और स्मृति से महाराणा प्रताप के शौर्य, पराक्रम और स्वाभिमान की गाथा कभी नहीं मिट सके। इतिहासकारों द्वारा महाराणा प्रताप के जीवन का सही मूल्यांकन किया जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने अपने त्याग से महानता के उच्च आदर्श स्थापित किये हैं।

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा कि महाराणा प्रताप ने मेवाड़ के मान-सम्मान के लिए मुगलों से जमकर लोहा लिया और कभी उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की। ऐसे महापुरूष के आदर्शों पर चलकर ही हम स्वाभिमानी और समृद्ध राजस्थान का निर्माण करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि राणा प्रताप का जिस तरह से झाला मन्ना, हकीम खां सूरी, भामाशाह तथा पूंजा भील ने समर्पण भाव के साथ सहयोग किया और मेवाड़ का स्वाभिमान कायम रखते हुए अपने राज्य

का उत्थान किया, उसी तरह हम सब प्रदेशवासियों को मिलकर समर्पण भावना से काम करते हुए प्रदेश को तरक्की की राह पर आगे ले जाना है।

उन्होंने कहा कि उदयपुर संभाग में कमेरी राजसमन्द में महाराणा राजसिंह और पन्नाधाय का पेनोरमा, डूंगरपुर के माण्डवा में कालीबाई का पैनोरमा, चित्तौडगढ़ में संत रैदास का पैनोरमा बनाया जायेगा तथा बांसवाड़ा के मानगढ़ धाम में राष्ट्रीय आदिवासी संग्रहालय बनाया जायेगा।

समारोह में मुख्यमंत्री ने मजावद से उबेश्वरजी तक 10 करोड़ रुपये की लागत से 10 किमी. सड़क को मिसिंग लिंक के तहत जोड़ने, 3 करोड़ की लागत से करदा-रोहिड़ा पेयजल संवर्धन योजना, 4 करोड़ की लागत से पदराडा ग्रामीण पेयजल योजना तथा मानसी वाकल बांध से झाड़ोल के 30 गांवों-मजरों को पेयजल योजना से जोड़ने की घोषणा की। उन्होंने ट्यूरिज्म सर्किट की मांग पर मेवाड़ कॉम्प्लेक्स के लिए 7 करोड़ रुपये, गोगुन्दा के राजतिलक कॉम्पलेक्स के लिए 1 करोड़ 63 लाख रुपये तथा चावण्ड में महाराणा प्रताप के समाधि स्थल के विकास के लिए 65 लाख रुपये देने की भी घोषणा की।

गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया, जनजाति विकास मंत्री नन्दलाल मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्रीमती राजे के नेतृत्व

में विगत ढ़ाई वर्षों में उदयपुर संभाग का एवं विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों का तेजी से विकास हुआ है। प्रारंभ में गोगुंदा विधायक प्रतापलाल गमेती ने स्वागत उद्बोधन दिया। समारोह में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री राजकुमार रिणवा, जलदाय मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ अधिकारी तथा आमजन उपस्थित थे।

दूसरे दिन महाराणा प्रताप इनडोर स्टेडियम के शिलान्यास अवसर पर केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रताप सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनकी जीवनी और उनका इतिहास पढ़कर ही राजस्थान की जीवनशैली को वास्तविक रूप से जाना जा सकता है। मीरां की भक्ति, पन्नाधाय की युक्ति और भामाशाह की सम्पत्ति के सामन्जस्य ने राजस्थान के इतिहास को विलक्षण बना दिया है। स्वाभिमान की रक्षा के लिए मरमिटने वाले प्रताप के महान् योगदान को अविस्मरणीय बनाने के लिए भारत सरकार ने उनकी जयंती को हर साल धूमधाम से मनाने का फैसला किया है। राजनाथसिंह ने कहा कि भारत की प्रतिष्ठा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से बढ़ी है। आज ग्लोबल डिप्लोमेसी एवं ग्लोबल पॉलिटिक्स में भारत एक केन्द्र बिन्दु के रूप में उभरा है। आज विश्व का कोई भी देश भारत को नजरअंदाज नहीं कर सकता। भारत की इस उभरती ताकत के अनुरूप नौजवानों को अपनी प्रतिभा को निखारना होगा।

मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा कि प्रदेश की खेल प्रतिभाएं राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का नाम रोशन कर सकें, इसके लिए राज्य सरकार 21 जून से खेल मैदान योजना शुरू करेगी। इस योजना से हर ग्राम पंचायत में अच्छे खेल मैदानों का निर्माण होगा और वहां के प्रतिभावान खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण और अभ्यास की सुविधाएं मिल सकेंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि साढ़े चार हजार दर्शक क्षमता के इस मल्टीपरपज इण्डोर स्टेडियम में पहले चरण में लगभग 14 करोड़ रुपये की लागत से अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्डों के अनुरूप 9 बैडमिंटन कोर्ट, हैंडबॉल, बास्केटबॉल, नेटबॉल, खो-खो, कबड्डी आदि खेलों से सम्बन्धित कोर्ट बनाये जायेंगे। साथ ही दूसरे चरण में करीब 10 करोड़ की लागत से अन्य खेल सुविधाएं विकसित की जायेंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम राजस्थान को खिलाड़ियों का प्रदेश बनाना चाहते हैं। जहां की प्रतिभाएं केवल प्रदेश का ही नहीं देश का भी सिर गर्व से ऊंचा कर सकें।

गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि उदयपुर शहर को हम दुनिया का मॉडल शहर और आयड़ नदी को विश्व की सबसे सुन्दर नदी बनायेंगे। सभा में उद्योग मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर, सांसद अर्जुनलाल मीणा तथा महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने उदयपुर की विरासत और इतिहास को आधुनिकता के साथ विकसित करने का संकल्प दुहराया।

इस अवसर पर सामान्य प्रशासन राज्यमंत्री जीतमल खांट, राजसीको के अध्यक्ष मेघराज लोहिया, राजसमंद सांसद हरिओमसिंह राठौड़, चित्तौडगढ सांसद सी.पी. जोशी, उदयपुर जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, प्रमुख शासन सचिव खेल एवं युवा मामले जे.सी. महान्ति सहित जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ अधिकारी तथा आमजन उपस्थित थे।

स्मृतियों के शिखर (11) : डॉ. महेन्द्र भानावत

विष्णु प्रभाकर : सच्चे और सहज जीवन के सारथी

साहित्यकार जो कुछ लिखता है वह हृदय के दर्द द्वारा लिखता है। जब मैं छोटा था तब तुलसी अपमानित थे पर आज वही तुलसी बड़े प्रगतिशील माने जाते हैं इसलिए कृतिकार का समय-समय पर उचित मूल्यांकन होते रहना चाहिये। मेरी मां और पत्नी; ये न होतीं तो मैं भी नहीं होता। खेद है कि आधुनिक सर्जक लोकसाहित्य नहीं पढ़ते।

विष्णु प्रभाकर अपने समग्र साहित्य-लेखन एवं जीवनधर्मिता में पूर्ण गांधीवादी मानवजीवी जीवन जिये। आवारा मसीहा जैसी कालजयी रचना के रूप में उन्होंने प्रर्याप्त यश पाया। विगत 10 अप्रेल 2009 को 97 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। उनके लिखे मेरे संग्रह में 15 पत्र हैं। इनमें 13 पोस्टकार्ड, एक अंतर्देशीय तथा एक पत्र पूरी कविता का है। अपने पत्रों में वे साहित्य की बातों के साथ-साथ घर-परिवार की बातें बड़ी आत्मीयता के साथ लिखते।

प्रभाकरजी से मेरी पहली मुलाकात चुरू के लोकसंस्कृति शोध संस्थान द्वारा आयोजित समारोह में हुई। यह समारोह 18-19 अप्रेल 1981 को हुआ जिसमें सर्वश्री कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. कुमारपाल देसाई तथा मुझे स्वर्ण पदक, शॉल तथा विशिष्ट सम्मानपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। मुझे यह सम्मान लोकसाहित्य के अध्ययन, समायोजन और प्रस्तुतिकरण के क्षेत्र में दिशानिर्देश करनेवाले मानक प्रकाशनों पर दिया गया। समारोह की अध्यक्षता विष्णु प्रभाकरजी ने की और उन्हीं के हाथों मुझे स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सच्चा साहित्यकार वह है जो अपने अनुभव को अनुभूति में बदल देता है। साहित्यकार जो कुछ लिखता है वह हृदय के दर्द द्वारा लिखता है। कोई भी कृतिकार जब किसी का सृजन करता है तब सम्मान की बात उसके मन में नहीं रहती। उन्होंने कहा, जब मैं छोटा था तब तुलसी अपमानित थे पर आज वही तुलसी बड़े प्रगतिशील माने जाते हैं इसलिए कृतिकार का समय-समय पर उचित मूल्यांकन होते रहना चाहिये।

यहीं मैंने प्रभाकरजी का एक चित्र खींचा जो उनके किसी दार्शनिक सोच में डूबे रहने का था। यह चित्र मैंने उनको भेजा। उत्तर में उन्होंने नागपुर से पत्र लिखा जो इस प्रकार है-

दिनांक : 16.6.1981

प्रिय बंधु,

आपका पत्र और चित्र दोनों मिले। मुझे गहरे चिंतन के मूड़ में पकड़ा है आपने। लिखा तो मुझे भी था पर चित्र आज तक नहीं आये। पता नहीं क्या बात है? अब तो बहुत देर हो गई। आपने अच्छा किया जो धर्मयुग को भेज दिया। छाप देंगे। नागपुर में मेरा बेटा है। लिखना होता है तो इधर आ जाता हूं। दस को गया था। कल लौट आया। अब 25 को जाऊंगा और 4 जुलाई को लौटूंगा। उसके बाद कुछ दिन दिल्ली रहूंगा।

अपनी मां और पत्नी पर लिखे लेखों की चर्चा में उन्होंने लिखा- उन लेखों की काफी चर्चा है। मेरे लिए तो वह स्मृति-तर्पण या श्राद्धकर्म है। मेरी मां और पत्नी; ये न होतीं तो मैं भी नहीं होता। 'मेरी मां' शीर्षक से एक लेख मैंने 1956 में उनकी मृत्यु पर लिखा था। ये सब नितांत व्यक्तिगत होते हैं पर इनका समाज के वृहत्तर जीवन पर प्रभाव भी होता है।

स्नेही

विष्णु प्रभाकर

भारतीय लोककला मंडल से मेरे संपादन में प्रकाशित मासिक रंगायन तो मैं प्रभाकरजी को भेजता ही, मेरी अपनी प्रकाशित पुस्तकें भी उन्हें मैं अवश्य भेजता। वे निरंतर मुझे पत्र लिखते और मेरे लेखन पर भी अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करते। रंगायन में प्रकाशित सामग्री को वे बड़ी उपयोगी और जानकारी से भरी मानते। एक पत्र में उन्होंने लिखा-

दिनांक : 16.11.1981

प्रिय भाई,

मुझे तीन पुस्तकों की आवश्यकता है। आपकी पुस्तकें दिल्ली में कहीं मिलती हैं या आपके पास से ही मंगवानी होगी।

स्नेही

विष्णु प्रभाकर

मैंने उन्हें लोकसाहित्य विषयक अपनी लिखी कुछ पुस्तकें भेजीं। उत्तर में उन्होंने आभार प्रकट करते लिखा-

दिनांक : 16.11.81

प्रिय भाई,

आपका पत्र व किताबें मिलीं। आपकी सहृदयता के लिए आभारी हूं। खेद की बात है कि आधुनिक सर्जक इस तरह का प्रामाणिक साहित्य नहीं पढ़ते। अभी सुधीर कुमार अग्रवाल आये थे। उस समारोह की रिपोर्ट प्रेस में दी है। मेरे दोनों भाषण का ठीक से रिकोर्ड नहीं हुआ। मुझे स्वयं याद नहीं क्या कहा था। कह गये हैं कुछ लिख कर दे दूं। आपके पास कुछ रिकोर्ड है क्या?

स्नेही

विष्णु प्रभाकर

कलामंडल के संस्थापक-संचालक देवीलाल सामर का 3 दिसंबर 1981 को निधन हो गया। इस उपलक्ष्य में रंगायन का जनवरी-फरवरी 1982 का श्रद्धांजलि अंक प्रकाशित किया गया। इस अंक की प्राप्ति पर उन्होंने लिखा-

दिनांक : 12.3.1982

प्रिय भाई,

तीन सप्ताह बाद दिल्ली लौटा तो 'रंगायन' का श्रद्धांजलि अंक देखा। वैसे मैंने इसे पूणे में श्रीमती मालती शर्मा के घर पर देख लिया था। सामरजी के व्यक्तित्व के अनुरूप ही है यह, पर मुझे लगता है कि उनकी स्मृति में एक वृहद ग्रंथ प्रकाशित होना चाहिये जिसमें उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का सही मूल्यांकन तो होगा ही उनके प्रिय कार्यों के संबंध में शोधपूर्ण लेख भी हों। आने वालों के लिए मार्गदर्शक होगा वह। और यह काम आप ही कर सकते हैं। एक वर्ष, दो वर्ष, जितना समय लगे, लगने दीजिये।

स्नेही

विष्णु प्रभाकर

प्रभाकरजी का एक मन विनोदी स्वभाव लिए था सो कभी-कभी पत्रों में भी उनकी दिल्लगी दिखाई पड़ती। एक बार मैंने उन्हें क्षमापना दिवस पर एक कविता लिख भेजी। उसमें बच्चों के नाम कविता, कहानी, मुक्तक और तुक्तक पढ़ लिखा-

दिनांक : 22.9.82

प्रिय भाई,

सांवत्सरिक क्षमापना के लिए आभारी। मैं भी वही कहना चाहूंगा जो आपने कहा। भाई मेरे! नाम रखने में आप बाजी मार ले गये। बड़ौदा में एक युवती 'नियति' से भेंट हुई थी। श्री देवेन्द्र सत्यार्थी की बेटी कविता थी पर आपने साहित्य की सभी विधाओं को सहेज लिया शायद परिवार नियोजन के कारण कुछ विधायें रह गईं। कविता, कहानी, मुक्तक, तुक्तक को बहुत-बहुत प्यार।

स्नेही

विष्णु प्रभाकर

'आछी करणी पार उतरणी' नामक लोककथाओं की जब मेरी पुस्तक प्रकाशित हुई तो एक प्रति प्रभाकरजी को भेजी। उन्होंने लिखा-

दिनांक : 22.6.83

प्रिय बंधु,

'आछी करणी पार उतरणी' की एक प्रति मुझे भेजी सो मिली। लगे हाथ कुछ कथायें पढ़ गया। भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप और परिचय इन्हीं कथाओं में मिलता है। ऐसी कथायें सारे भारत में यत्किंचित परिवर्तन के साथ पाई जाती हैं। पढ़ते समय कुछ शब्द समझ में नहीं आये पर भावार्थ समझने में विशेष कठिनाई नहीं होती। क्योंकि वैसी कहानियां सब कहीं मिलती हैं। इस छोटी सी किताब के लिए मेरी हार्दिक बधाई। आकार में छोटी होकर भी अर्थ में बहुत गहरी है। सबको स्नेह स्मरण।

सस्नेही

विष्णु प्रभाकर

इसी तरह 'निर्भय मीरां' पुस्तक पर उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार व्यक्त की-

दिनांक : 2.8.94

प्रिय भाई

'निर्भय मीरां' की एक पुस्तक भेजी, उसके लिए बहुत-बहुत आभार। मीरां के संबंध में इसमें बहुत तथ्यात्मक जानकारी है। यूं तो उनके संबंध में बहुत मतभेद हैं लेकिन आपने खोज करके सही सामग्री प्रस्तुत की है। हमारे जैसे व्यक्तियों के लिए ये जानकारी बहुत अर्थ रखती है।

आशा है, मीरां के संबंध में खोज करनेवालों के लिए यह प्रामाणिक होगी। मीरां हमारे साहित्य का एक अद्भुत चरित्र है। उसका साहस, निर्भयता, अपने उद्देश्यों के लिए समर्पण की भावना; ये ऐसे विशिष्ट गुण हैं जो उसको बहुत ऊंचा उठा देते हैं। आपने एक अच्छा काम किया है। हार्दिक बधाई।

स्नेही

विष्णु प्रभाकर

कविता लेखन को नई ताजगी देती है। लिखते-लिखते जब व्यक्ति थक सा जाता है तब एक भिन्न संदर्भ में, भिन्न विचार के लिए वह कविता का सहारा लेता है। ऐसा भी होता है जब गद्य में कोई बात ढंग से नहीं बैठ रही होती है तब कविता ही उसका संबल बनती है। विष्णु प्रभाकर के साथ भी यही रहा है। एक अंतर्देशीय पत्र में उन्होंने मुझे दो शब्द के रूप में एक कविता भी लिख भेजी। नये वर्ष पर लिखा यह पत्र इस प्रकार है-

दिनांक : 90

प्रिय आत्मन्,

अपराधी हूं कि नववर्ष पर प्राप्त आपकी शुभकामनाओं का उत्तर समय पर नहीं दे पाया। आयु और रोग इसका प्रमुख कारण रहे। आपके स्नेह का क्या प्रतिदान हो सकता है। आपके इष्टदेव आपको अंधकार की शक्तियों से जूझने का मनोबल दें। अपने दायित्व को निभाते हुए आप निरंतर आगे बढ़ते रहें। आपके सुंदर, सुनहरे भविष्य की कामना करते हुए मैं दो शब्द एक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं। बहुत-बहुत स्नेह के साथ।

आत्म-मंथन

कितने वर्ष, कितनी बार
आते हैं नित नवीन बनकर
और समय बहता रहता है अनवरत
कल आज और फिर कल
क्यों नहीं टूटती फिर जड़ता 'मैं' की?
क्यों अहम का दंश
डस लेता है हर बार
अपने ही स्वयं को?
कोई उत्तर है इस पहेली का?
इस नये वर्ष के
नये दिन के पास या फिर
उस नये वर्ष के
उस नये दिन के पास?

आपका अपना

विष्णु प्रभाकर

और यह कविता देखिये। कितने आक्रोश के साथ किंतु दिशाहीन होते, भटकते, भटकाते राजनेताओं के चरित्र पर तीखा व्यंग्य करते लिखी। मेरी दृष्टि में व्यवस्था पर चोट और राजनेताओं को खरीखोटी सुनाने की बात कविता के माध्यम से ही सुगम बनती है।

-शेष पृष्ठ सात पर

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-

यस बैंक का 250 करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य

उदयपुर। भारत की पांचवीं सबसे बड़ी निजी क्षेत्र की यस बैंक लि. ने घोषणा की कि वह अपने केन्द्रित, तीव्र सीएसआर व स्थिरता एक्शन के माध्यम से वर्ष 2020 तक आजीविका, जल सुरक्षा और पर्यावरण स्थिरता के क्षेत्रों में 250 करोड़ रुपये के निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी राणा कपूर ने कहा इसके लिए पांच साल की एक योजना को मंजूरी दी है। हम 2020 तक सुरक्षित और स्वच्छ पीने का पानी पहुँचा कर 10 करोड़ लोगों की जिन्दगी तक पहुंचने व भारत में जलवायु वित्त के लिए 5 बिलियन अमरीकी डालर जुटाने के लिए प्रतिबद्ध है। 250 करोड़ रुपए का लक्ष्य यस बैंक के सकारात्मक सीएसआर और सस्टेनेबल एक्शन के प्रति समर्पण को दर्शाता है और यह जलवायु जोखिम कम करने के लिए भारत की नेशनली डिटरमाइंड कंट्रीब्यूशन (एनडीसी) के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के मुताबिक है, जिसकी इसने दिसंबर 2015 में पुष्टि की थी। बैंक ने यह पुष्टि पेरिस में आयोजित सीओपी 21 के अवसर पर की थी। बैंक वित्तीय वर्ष 2015-16 में अपने लाइवलीहुद एंड वाटर सिक्योरिटी पहल के जरिए हर दिन 2 लाख लोगों तक पहुंचा। भारतीय रेलवे के साथ भागीदारी करके बैंक 2019 तक 1000 रेलवे स्टेशनों पर साफ पीने का पानी उपलब्ध कराएगा।

पोथीखाना

गौतम स्वामी के जीवन प्रसंगों पर प्रभावी कृति

गंगा से भी पवित्र, हिमालय से भी उत्तुंग, आकाश से भी विस्तृत और सागर से भी गंभीर गौतम स्वामी का नाम अष्ट सिद्धि, नव निधि, अट्ठाइस लब्धि और चौदह विद्याओं का आवास है। सरस्वती और लक्ष्मी दोनों प्रसन्न हो जावे, ऐसी परम शक्ति और भक्ति से परिपूर्ण गौतम नाम सबका बेड़ा पार करने की सामर्थ्य रखता है।

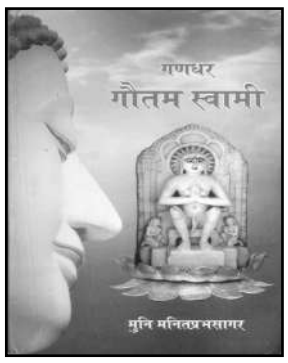

'गणधर गौतम स्वामी' पुस्तक के लेखक मुनि मनितप्रभ सागर की अटूट श्रद्धा, अहर्निश भक्ति तथा अखंड आस्था ने इस अभिराम कृति की रचना की है। इसके लिए गणाधीश मणिप्रभ सागर का यह कथन उल्लेखनीय है- समाधिपूर्ण एकाग्रता व अनुशीलन-परिशीलन से पूर्ण, प्रखर प्रतिभा के आधार पर गुरु गौतम स्वामी के जीवन के विविध आयामों, प्रसंगों का वर्णन एक इतिहास की रचना है। साध्वी डॉ. नीलांजनाश्री ने पुस्तक प्रणेता मुनि मनितप्रभसागर के लिए यह उचित ही लिखा कि मुनिश्री लेखन कला में परम प्रवीण और पारंगत हैं। उनके पास शब्दों का सौंदर्य और भावों का माधुर्य है। मुनिश्री की प्रांजल भाषा, भाव प्रवण शैली और वर्णन की रोचकता किसी भी पाठक को अंत तक मोहित किये रहती है। आचार्यश्री जिनकांति सागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर, मांडवला-343042 से प्रकाशित, आकर्षक सजिल्द 232 पृष्ठीय इस कृति का मूल्य केवल 50 रूपया है।

कथा प्रसंगों में झांकती दिवाकरजी की दीप्ति

जैन दिवाकर मुनिश्री चौथमलजी का प्रभाव जैनों तक ही सीमित नहीं था। उनकी प्रवचन शैली से प्रभावित हो सभी जातियों के लोग बड़ी संख्या में उन्हें सुनने एकत्र होते थे। उनका प्रभाव राजा-महाराजाओं तथा श्रेष्ठीजनों तक भी समान रूप से था। उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य सृजन किया। साहित्यसेवी विपिन जारोली ने उनकी लिखी सवा सौ से अधिक कृतियों का पता लगाया और दिवाकर ग्रंथावली के खंडों में सुरक्षित किया।

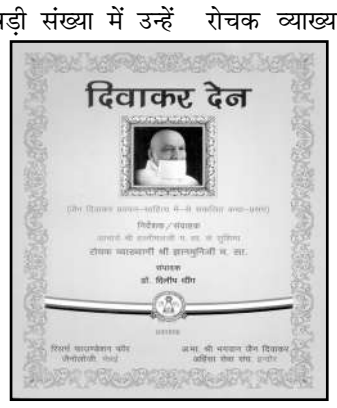

'दिवाकर देन' में दिवाकरजी के 208 कथा-प्रसंगों का संचयन है जो आचार्य हस्तिमलजी महाराज के सुशिष्य रोचक व्याख्यानी पं. ज्ञानमुनिजी की प्रज्ञा-प्रतिभा का मूल्यवान अवदान है। जैन दर्शन के ख्यात विद्वान डॉ. दिलीप धींग ने उनका संपादन किया है। रिचर्स फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी चैन्नई तथा अखिल भारतीय श्री भगवान जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ इंदौर के संयुक्त प्रकाशन से ज्ञानमुनिजी के शब्दों में पाठकों के जीवन में धर्मप्रियता और सद्गुणों की सुवास बढ़ेगी।

केड़ियाजी के ललित निबंध

श्री नथमल केड़िया भारतीय संस्कृति और समाज की उदात्त चेतना के चारु लेखक हैं। उनका अध्ययन भारत के प्राचीन आख्यानों तथा परंपरागत लोक आस्थाओं की जड़ों को खंगालते हुए उसके सुंदरतम को प्रतीती करना है। अपने ललित निबंधों के माध्यम से यह कार्य वे विगत छह दशकों से बखूबी कर रहे हैं।

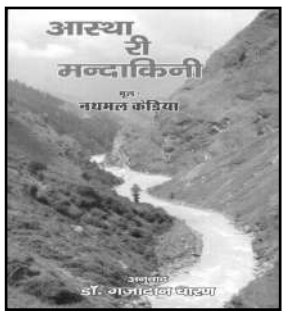

प्रस्तुत पुस्तक उनके ऐसे ही लिखे गये 11 निबंधों का डॉ. गजादान चारण द्वारा किया गया राजस्थानी अनुवाद है। अनुवाद का काम बहुत दौरा है। राजस्थानी में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका हिंदी अनुवाद संभव नहीं है। ऐसे ही हिंदी से राजस्थानी में अनुवाद करना दौरम ही है। सब कुछ बदलते संदर्भ में आंचलिक भाषाओं के कई शब्द तिरोहित होते रहे हैं तो कई नयेपन के उबड़-खाबड़ का भी एहसास दे रहे हैं। इस दृष्टि से भी शब्द संस्कृति को बचाने के लिए अच्छी पुस्तकों के अधिकाधिक अनुवाद होने चाहियें। इस दृष्टि से डॉ. गजादान ने कड़ी मेहनत से हमार समक्ष पांच ही पकवान जैसा परुसा प्रस्तुत किया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

केड़ियाजी के ललित निबंध उस नदी की तरह हैं जिसकी धार न कभी सूखती है और न कहीं अपना मिठास ही खोती है। उसके पास जो भी प्यासा आता है पूर्णत: तृप्त ही नहीं होता अपितु वर्षों तक उसका स्वाद भी उस अमृत में रहता है।

राजस्थान साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास सादुलगंज, बीकानेर से प्रकाशित 96 पृष्ठीय सजिल्द पुस्तक की कीमत 100 रूपये है।

पाठकनामा

जिन्हें जाना उन्हें और जाना

-प्रयाग जोशी-

'जिन्हें मैं जानता हूं' के माध्यम से मैंने गोवर्द्धन बाबा, स्वरूप व्यास, श्रीलाल जोशी व करणा भील के बारे में जाना। देवीलाल सामर और जनार्दनराय नागर जैसे संस्था-संस्थापकों के बारे में और ज्यादा जाना। डॉ. सत्येन्द्र, डॉ. मेनारिया और अगरचंद नाहटा के वे ओने-कोने डॉ. भानावत की टार्च की रोशनी में देखे जिन्हें अकादमिक किताबों में नहीं ढूंढ़ा जा सकता। लेखक ने अंतरंग में प्रवेश करके अपने बेलौस स्वभाव, वाणी के खरेपन और गोपन से गोपन के भी जाननहार लोकात्म के पारखी होने को प्रमाणित कर दिखाया है। पुस्तक का लेखन सरल, रोचक और प्रासंगिक है।

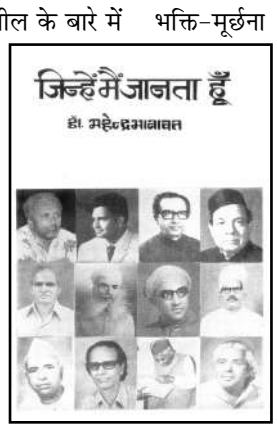

'निर्भय मीरां' पढ़ी। यात्रा में मैं सोमनाथ और चित्तौड़गढ़ देखने गया था। दोनों जगह मीरां के ठौर देखे थे। इस किताब से स्मृतियों का सत्यापन हुआ। किताब में ऐतिहासिकता अपने कगारों को तोड़कर लोक की निजंधरीयत में विलीन हुई है। संगतराश के हाथों में पड़कर छैनी-हथौड़ा जो कमाल कर दिखाते हैं वही डॉ. भानावत की कलम की नोक पर चढ़ी हुई लोकगायकों की शैली ने दिखाया है। वार्ता-कथा, गाथा-पवाड़ा, किस्सों-किंवदंतियों व वैरागियों के लटकों-झटकों को पकड़कर मीरां की भक्ति-मूर्छना को लेखक जिस ढंग से रेखांकित कर सका वह पुस्तकीय पोथी पत्रों वाली बैठी-ठाली लेखकी से हो नहीं सकता। किताब की रोचकता दो ही दिन में उसे पढ़वा ले गई।

'मीरां ने कोई पद नहीं लिखा' शीर्षक में लेखक ने जो निष्कर्ष दिये हैं वे 'लोकस्तुवं नित्यं' मन से निकले हैं। उसमें भारत भर की विभिन्न किस्म की मिट्टियों की जानी-मानी-पहचानी बनी हुई लक्षणों की पराव है। ये वे लक्षण हैं जिनमें सत्य-तथ्य और इतिहास शाका-पौढ़ों में बिखर जाते हैं। भावुकता और बौद्धिकता के मध्यवर्ती अन्तरपट उठ जाते हैं। सबकुछ मानो आवेश और आस्थाओं के क्षितिजों की तरह उड़ जाता है। लौकिक-अलौकिक मिल जाते हैं। वाचिक लोकवार्ताओं को पढ़ने के लिए पाठ तैयार कर दिया लेखक ने। इसमें संदेह नहीं है कि कबीर संत-कवि से लोकछंद बने हुए हैं। अवध में कबीर-छंद गाया जाता है। मीरां भी उसी प्रकार 'पद' बन गई है। बहुत अच्छी किताब है 'निर्भय मीरां'।

कोरियाई निवेश प्रतिनिधिमण्डल ने किया महिन्द्रा वर्ल्ड सिटीज का दौरा

उदयपुर। महिन्द्रा समूह की रियल एस्टेट और इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास इकाई महिन्द्रा लाइफ स्पेस ने हाल ही में दक्षिण कोरिया से अपनी तरह के पहले सरकारी एवं व्यापारिक प्रतिनिधिमण्डल का महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी (एमब्ल्यूसी) चेन्नई और जयपुर में स्वागत किया। बीस सदस्यीय यह प्रतिनिधिमण्डल, 11 कोरियाई ऑटोमोटिव, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं निर्माण क्षेत्र की कम्पनियों तथा तीन सरकारी एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करता है। महिन्द्रा लाइफ स्पेस डेवलपमेंट लि. की इंटीग्रेटेड सिटीज एण्ड इंडस्ट्रीयल क्लस्टर्स, सीईओ संगीता प्रसाद ने कहा कि एमब्ल्यूसी चेन्नई और एमब्ल्यूसी जयपुर में इस कोरियाई प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों ने वहां स्थित विभिन्न कम्पनियों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की तथा उनके इंटीग्रेटेड बिजनेस सिटीज में परिचालित स्थापना और वहां उपलब्ध विभिन्न लाभों के अनुभवों को समझा। इन्होंने ऑटोमोटिव एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र की 45 कम्पनियों के प्रतिनिधियों से सीआईआई और आईसीसीके द्वारा आयोजित बी2बी बैठक के दौरान चर्चा की। इस पहल को कोरिया के व्यापार, उद्योग एवं ऊर्जा मंत्रालय (एमओटीआईई) तथा कन्फैडरेशन ऑफ इण्डियन इण्डस्ट्री (सीआईआई) का समर्थन प्राप्त था, जबकि इस भ्रमण की व्यवस्था इण्डियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स इन कोरिया (आईसीसीके) द्वारा की गई।

एमब्ल्यूसी जयपुर में आईसीसीके के महासचिव एस जुंग यून ने कहा कि एमब्ल्यूसी जयपुर का समावेशी विकास का नजरिया है जिसमें स्थानीय समुदाय को शामिल किया गया है। बुजियोन इलेक्ट्रॉनिक्स की मैनेजमेंट टीम बिजनेस एण्ड स्टटजी के डांग हून ली ने कहा कि भारत और तमिलनाडु में हमारा पहला दौरा है। हमें महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी (एमडब्ल्यूसी) जैसी सुनियोजित एकीकृत बिजनेस सिटी को देख कर काफी खुशी हो रही है

शीघ्र प्रकाशित

विश्वप्रसिद्ध हल्दीघाटी के निकट बसे उदयपुर संभाग के छोटे से गांव मोलेला के कुम्हार परिवारों द्वारा निर्मित लोक देवी-देवताओं की माटी की मूर्तियों पर पहली बार लोकधर्मी समाजशास्त्रीय अध्ययन। आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित।

''यदाकदा ही ऐसी पाण्डुलिपियां सामने आती हैं जिन्हें आप एक बैठक और विशेष एकाग्रता के साथ पढ़ लेते हैं। इस पाण्डुलिपि को मैं एक ही बैठक में मात्र पचास मिनिट में पढ़ गया। मुझे आश्चर्य है कि इतने पृष्ठों की पूरी पाण्डुलिपि कैसे पढ़ ली। जब तक आप स्वयं इस पुस्तक को नहीं पढ़ेंगे तब तक 'कहानी का करिश्मा' और मोलेला की मिट्टी का मतलब आपकी समझ में नहीं आयेगा। पुस्तक की पाठकीयता को कहानी ने गुदगुदाया है। एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।''

-बालकवि बैरागी द्वारा लिखित पुस्तक की भूमिका से

कहानी विधा पर 51 हजार का पुरस्कार

आचार्य निरंजननाथ स्मृति संस्थान के सहयोग से सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में साहित्य पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला सम्मान इस बार कहानी विधा पर दिया जायेगा। इसके अंतर्गत पुरस्कृत रचनाकार को इक्यावन हजार रूपये नकद, शॉल, स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाएगा।

इस पुरस्कार हेतु गत पांच वर्षों (2011-2015) में प्रकाशित कहानी विधा की तीन पुस्तकें लेखक, प्रकाशक या कोई भी शुभचिंतक भिजवा सकता है। प्रविष्टियां 31 अगस्त 2016 के पूर्व संयोजक के पते पर अवश्य पहुंचा दें। पुरस्कार का निर्णय 2016 में ही कर दिया जाएगा। निर्णायक मंडल एवं सम्मान समिति के अध्यक्ष का निर्णय अंतिम एवं मान्य होगा।

इसके लिए क़मर मेवाड़ी, संयोजक, आचार्य निरंजननाथ सम्मान-2016, सम्बोधन, कांकरोली - 313324, जिला राजसमंद (राजस्थान), मो. 09829161342, 09413671342 पर संपर्क किया जा सकता है।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 जून 2016

शिक्षा वृद्धों के पांव दबाने जैसी हो

शिक्षा का ढर्रा आजादी के पूर्व तो जैसा भी था, व्यक्ति को कमाने लायक बना देता था। आजादी मिलते ही एक-एक क्लास डाकने का सुख सभी छात्रों को सुकून दे गया था पर उसके बाद तो शिक्षा का ढांचा प्रयोग की भट्‌टी में ही उकलता रहा। बच्चों पर शिक्षा का बोझा गधे के बोझ से भी अधिक बढ़ता गया। तब मुश्किल से सौ में से साठ अंक अति भाग्यवानों के आते थे। अब नब्बे आने पर भी संतोष नहीं होता। बच्चा बिचारा होकर खेलने, कूदने तथा मौज-मस्ती भरे बचपन को भूल कोचिंग क्लासों की शरणाय नम: करता, चश्मे में झांकता, आंख-नंबरी बना अटेंशन-अलर्ट की मुद्रा छोड़ टेंशन के ललाटी सलवटों में ही खोया दिखाई देता है। देखते-देखते राजस्थान में कोटा कोचिंग क्लासों का सिरमौर बन गया और अब देखते-देखते ही कोचिंग टेंशन के भूतहा ने एक-एक कर सात बच्चों की जान ले ली। पुराने वैद्यराजजी मरीज की नाड़ी देखकर रोग की नस पकड़ लेते थे। अब उनकी आंख मार्केटिंग मैनेजमेंट की पारखी बन तरह-तरह की मशीनी जांचों में रोगी को हिचकोला खाने की सैर कराती नजर आती है।

कईबार जांचों में सब कुछ ठीक है मगर रोगी अ-ठीक है। सफलतापूर्वक ऑपरेशन हो गया है मगर भीतर रुई की फफूंद या फिर ऑपरेशन उपकरण छूट गया है। शिक्षा भी ऐसे ही बांकुरों के कौशल में हवामहल बनी हुई है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया सुनाया करते थे कि वे एकबार अपने दर्दीले दांत को पकड़े डाक्टर के पास गये। डाक्टर ने सब तरफ से देख-समझ दर्दीले दांत की बजाय उसके पास वाले रोबीले दांत को उखाड़ दिया। दूसरे दिन फिर डाक्टर की शरण पकड़ी तो डाक्टर लज्जाजनक अफसोस करने की बजाय मुस्कराता बोला, लोजी अभी उसे निकाल देते हैं। शिक्षा के पाठ्यक्रमों का भी यही हाल है। एक वह समय था जब-

देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करके करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहीं, नैनन के जल से पग धोये।।

अब बयानबाजी का युग हो गया है। संतरी से लेकर मंतरी तक सब बयानबाजी में लगे हुए हैं। ज्यादा हुआ तो कमेटी-दर-कमेटी बिठा देंगे। कमेटी रिपोर्ट देगी मगर उसे पढ़ने वाला कोई नहीं होगा। जोर जबर्दस्ती से पढ़ भी ली होगी तो अमल में लाने वाला कोई जिम्मेदारी नहीं लेगा। खबर क्या बनेगी? उन बच्चों की जिन्होंने अपना जीवन खो दिया। उस पाठ्यक्रम की जो लादा जा रहा है। उस बोझा की जिसे बच्चा ढो रहा है। जड़ कहीं नहीं हाथ लगेगी। डाक्टर जैसे शरीर के अंगों की जांचें करा रहा हैं, कोर्स निर्धारक, निर्माणक एक्सपर्ट की सहायता ले रहा है तब तक या तो फाइल ठंडे बस्ते में चली जायेगी या अधिकारी बदल जायेगा और कुछ नहीं बदला तो सत्ता बदल जायेगी।

बड़ेरे उम्र पार होने पर अपने पांव दबाते थे। बच्चे धीरे-धीरे, हौले-हौले उनके पावं दबाते तो शरीर को आराम मिलता और उन्हें सुख की नींद आ जाती। शिक्षा भी वृद्धों के पांव दबाकर उन्हें सुख पहुंचाने वाली सहजता जैसी होनी चाहिये।

पत्र-पिटारी

रात्रि चौपालें महज सोहरत एवं प्रचार हेतु

ग्रामीण क्षेत्रों की जन समस्याओं के निराकरण के लिए राजस्थान सरकार ने गांव-गांव रात्रि चौपालें लगाने के आदेश जारी कर दिये पर इन चौपालों की सार्थकता एवं निरर्थकता पर कभी ईमानदारी से विचार नहीं किया। अपने 85 वर्षीय अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि जो जिला अधिकारी सूर्य की रोशनी में समस्याओं का समाधान नहीं निकाल सकते वे रात्रि चौपालों में हजारों का डीजल-पेट्रोल जला किन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ेंगे। रात्रि चौपालें जो दिन में नहीं दिखती महज सौहरत और प्रचार हेतु की जा रही हैं। इस सत्य को सभी लोग जानते हैं पर सस्ती लोकप्रियता हेतु लाखों-करोड़ों का अनावश्यक अपव्यय हो रहा है। इसका सही मूल्यांकन ईमानदारी से होना चाहिए। **-दीनदायल ओझा, जैसलमेर**

शब्द रंजन के 8वें अंक में लेख एक लेखक दो का वृतांत जानकर मुझे 40 वर्ष पुरानी घटना याद आ गई। मेरे एक मित्र ने सुनाया कि खून और आत्मा की पुकार नाम से एक उपन्यासकार अपनी पांडुलिपि लेकर दिल्ली गया। वहां कई प्रकाशकों से उसका पाला पड़ा। एक प्रकाशक ने कहा कि हम इसे छाप देंगे परन्तु नाम किसी और का आयेगा। आपको तो अपनी लिखाई का पारिश्रमिक मिल जायेगा। उस मित्र ने उसके बाद कोई कलम नहीं चलाई और साहित्य का क्षेत्र ही छोड़ दिया।

-बंशी साकेत, बड़ी

शब्द रंजन मिल रहा है। उसके जरिये आपसे भेंट हो रही है। इस बार श्रीमती दिनेश नंदिनीजी का परिचय मिला। बहुत पहले इनके गद्य गीतों को पढ़कर अच्छा लगा था। उन दिनों मैंने भी अलग ढंग के कुछ गद्य लिखे थे, जो लोगों को बहुत पसंद आये। डॉ. किरनचंद्र नाहटा का कुछ दिनों पहले कलकत्ता आगमन हुआ था। मारवाड़ी सम्मेलन ने उनको पुरस्कार दिया था, तब वे मेरे घर पर भी आये थे। उन्होंने मेरे हिंदी के ललित निबंधों का राजस्थान में अनुवाद कराकर प्रकाशित किया। वह पुस्तक 'आस्था री मन्दाकिनी' प्रेषित कर रहा हूं। **-नथमल केड़िया, कलकत्ता**

शब्द रंजन अति आवश्यक एवं अनिवार्य पत्र लगता जा रहा है। जो लेख कहीं पढ़ने को नहीं मिलते, उन पर इसमें पढ़कर अच्छा लगता है। कहां-कहां से न जाने कबसे यह सामग्री संभाल रखी है? नये लोगों को भी जोड़ते जा रहे हैं। स्मृतिशेष व्यक्तियों पर जो कुछ लिखा जा रहा है, ऐसी जानकारी अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। यह निरंतरता, यह नव्यता बनी रहे। अधिक से अधिक लोग जुड़ते रहें। यही शुभकामना। **- डॉ. खटका राजस्थानी, विजयनगर**

बंदा बिकाऊ है

-हरमन चौहान-

जी हां, मैं डंके की चोट पर बरसों से कह रहा हूं कि मैं बिकाऊ हूं लेकिन पिछले पचास बरसों से मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। मित्रगण तो हंसी उड़ाते ही रहे हैं लेकिन शादी के बाद पत्नी भी हंसी उड़ाती रही है। मध्यमवर्ग में जन्मा पति अपनी प्यारी-प्यारी पत्नी को मंहगे-मंहगे तोहफे कहां से दे सकता है? यह तो बड़े-बड़े उद्योगपति, नेता, अभिनेता ही दे सकते हैं ना? टीवी में मंहगे-मंहगे उपहार और ताजमहल, आगरा से लगाकर ताजमहल होटल, मुम्बई तक ऐसे लोग अपनी पत्नियों, प्रेमिकाओं को सोने-जवाहरात के आभूषणों के अलावा भी कई मंहगी-मंहगी चीजें भेंट करके प्रदर्शन करते हैं, तब मेरी पत्नी उदाहरण दे-देकर कहती है कि पति हों तो ऐसे।

उसका व्यंग्य मैं समझता हूं। महीने के बजट के अनुसार मैं उसे घर की आवश्यकताओं की चीजें लाकर देता हूं लेकिन बरसों से फरमाइशें कम ही नहीं हो रही हैं। कई बार कह चुका हूं कि तुम्हारी फरमाइशें मैं पूरी नहीं कर सकता हूं। उसे कहता हूं कि पुराने जमाने में गुलामों पर बोलियां लगाई जाती थीं, उसी तरह नीलामी में मुझे बेच दो। बीच सड़क पर चिल्लाओ कि एक मेरा गुलाम बिकाऊ है, है कोई जो इसे खरीद ले? मैं खुशी-खुशी तुम्हारी खुशी के लिए बिक जाऊंगा। पत्नी हंस कर कहती है कि तुम जैसे दो टके के लेखक को कौन खरीदेगा? कोई दो कौड़ी भी देने को तैयार नहीं होगा। तेरी दो टकिया की नौकरी में मेरा लाखों का सावन बरबाद हो गया, अब ढलती उम्र में तुमको कौन खरीदेगा?

बात तो सही है। एक फटीचर लेखक को कौन खरीदेगा? बंदा क्रिकेट खिलाड़ी होता तो चौके और छक्के लगाकर बिक सकता था। तो क्या मैंने साहित्य में चौके और छक्के नहीं लगाये? अगर साहित्य में लगाये भी हों तो इन चौकों और छक्कों को किसने देखा, पढ़ा? पढ़कर चटखारे भी लिए होंगे लेकिन अब तो दादुर भये वक्ता। हमें कोई पूछे या नहीं लेकिन मैं प्रायोजित कार्यक्रम करने वाले टीवी चैनलों से, नेताओं से, अभिनेताओं से और उद्योगपतियों से गुजारिश करता हूं कि एक नजर इधर भी डाल लें। ढलती उम्र में हमारी भी इज्जत बचा लें पत्नी के समक्ष। अरे भाई, कोई तो प्रायोजक बनकर हमारे सामने आए और इस गुलाम को करोड़ों में नहीं, लाखों में ही खरीद ले। लाखों न सही, हजारों में ही खरीद ले। हजारों में नहीं, सैंकड़ों में ही खरीद ले।

व्यंग्य

हमारे प्रकाशक तो हमें दो कौड़ी के हिसाब से समझते हैं और लेखक को अंगूठा बताते हैं। उनसे भी गुजारिश है कि अब जमाना बदल गया है, अकेले ही करोड़पति बन रहे हो और लेखक को रायल्टी के नाम पर अंगूठा, यह कब तक चलेगा? मैं ही नहीं, सभी लेखकों की पत्नियां लेखकों से पूछ रही हैं कि आखिर रहे तो कंगाल के कंगाल ही ना। हमारा दुर्भाग्य है कि हमने साहित्यकारों से ब्याह किया। काश! हम क्रिकेटरों से ब्याह करतीं। मैंने श्रीमती से कहा कि इसमें क्या दोष? हमारे मां-बाप क्रिकेट क्या, कोई भी खेल खेलने से हमेशा टोकते थे कि खेलोगे कूदोगे तो बनोगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब। हमने पढ़ाई करी और नवाब नहीं बने। खेलते तो करोड़पति बनते। मैंने कई गृहिणियों से बात की कि क्रिकेट खिलाड़ी करोड़ों में बिक रहे हैं। आपको कैसा लग रहा है? अधिकतर ने यही जवाब दिया कि हमारे पति काश! क्रिकेट खिलाड़ी होते। इनमें कोई इंजीनियर से लेकर हर क्षेत्र की पत्नियां थीं जो अब पछता रही हैं। मैंने सबको बोला कि पहले जमाने में गुलामों की नीलामी होती थी और आज क्रिकेटरों की हो रही है। यह कोई अच्छी बात है क्या? वे बोलीं- मगर हम तो करोड़पति बनती न।

मैंने पत्नी से कहा कि भई, एक ताजा खबर है कि क्रिकेटरों की तरह ही हर क्षेत्र में, ऐसे गुलामों की अब प्रायोजक बोली लगायेंगे। चिकित्सा क्षेत्र में किडनी या अन्य अंग निकालने वाले डाक्टर अब अरबों रूपये में बिकेंगे और खून करने वाले या तंदूर में जलाने अथवा दहेज हत्या में जिंदा जलाने या भ्रूण हत्या के मामलों में करोड़ों की नीलामी होगी। मेरे प्रकाशक ने बताया है कि हम भी लेखकों पर बोली लगायेंगे। विशुद्ध साहित्य लिखने के बजाय अब ऐसी घटनाओं के बारे में लिखने वालों की नीलामी करेंगे। अब बोलो, तुम क्या चाहती हो?

वह बोली- आप तो यहां पर भी पिछड़ जाओगे। यह मेरा दुर्भाग्य है कि आप किसी भी काबिल नहीं हो। आपको यहां पर भी कोई दो कौड़ी में खरीदने के लिए तैयार नहीं होगा। हे भगवान! मेरे को कैसा पति मिला, जो करोड़पति नहीं है। मैंने कहा- भागवान! संतोष रखो। संतोष सबसे बड़ा सुख है। मैं कौड़ीपति हूं, तुम भगवान से दुआ करो कि अगले जनम में मैं क्रिकेटर बनूं और तुम मेरी पत्नी। वह झुंझलाकर बोली- हरगिज नहीं! तुम अपने आदर्शों के साथ कभी बिकने वाले नहीं हो। लेकिन पत्नी की खुशी में जी हां, मैं बिकने को तैयार हूं। कोई मुझे दो कौड़ी में ही खरीद ले तो मैं अपनी पत्नी को दो कौड़ी हाथ में थमा सकूं। अगला जनम किसने देखा है?

फेयर एंड लवली फाउंडेशन, एनआइआइटी और लिक्विड इंग्लिश एज में गठबंधन

उदयपुर। हिंदुस्तान यूनिलीवर ने सरकार की 'स्किल इंडिया' पहल को सहयोग करने के लिए एनआइआइटी लि. और लिक्विड इंग्लिश एज के साथ गठबंधन किया है। कंपनी ने मोबाइल स्किल्स शिक्षा मंच लॉन्च करने की योजना बनाई। इस मंच के लिए एनआइआइटी व लिक्विड इंग्लिश एज पाठ्यक्रमों का लाभ उठाया गया है।

हिंदुस्तान यूनिलीवर के सीईओ संजीव मेहता ने कहा कि कंपनी द्वारा फेयर एंड लवली फाउंडेशन की शुरूआत शिक्षा के जरिये महिलाओं को सशक्त बनाने और निजी पहचान बनाने की उनकी तलाश को सहयोग करने के उद्देश्य के साथ की गई थी। फेयर एंड लवली स्कॉलरशिप्स ने बीते एक दशक में 1500 से अधिक महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बनाया है और हमारे आधुनिकतम मोबाइल स्किल्स शिक्षा मंच की पेशकश इस कार्य को और आगे बढ़ायेगी। हमने 2020 तक 50 लाख महिलाओं के लिए कौशल-आधारित पाठ्यक्रमों की व्यापक श्रृंखला तक पहुंच बनाने का लक्ष्य तय किया है। हमें इस पहल के लिए दुनिया की एक प्रमुख प्रशिक्षण एवं प्रतिभा विकास कंपनी एनआइआइटी और भाषा प्रशिक्षण में अग्रणी लिक्विड इंग्लिश एज के साथ गठबंधन करके खुशी हो रही है।

एनआइआइटी लि. के चीफ स्ट्रैटेजी ऑफिसर उदयसिंह ने कहा कि एनआइआइटी डिजिटल रूप से जुड़े प्रत्येक भारतीय को कौशल-आधारित प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए हमेशा तकनीक का लाभ उठाने में अग्रणी रहा है। एनआईआईटी डॉट टीवी एक बेहतरीन इनोवेशन है जिसके द्वारा 5400 लाइन और ऑन-डिमांड पाठ्यक्रमों की पेशकश की जाती है और इसने समय, स्थान और भाषा के अवरोध को दूर किया है और प्रत्येक भारतीय के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण को मुफ्त में उपलब्ध कराया है।

लिक्विड इंग्लिश एज के सीईओ विवेक अग्रवाल ने कहा कि अधिकांश कौशल-आधारित कॅरियर्स खासतौर से रीटेल, ब्यूटी और हॉस्पिटैलिटी में ग्राहकों का सामना करने वाली भूमिकाओं में प्रवेश करने के लिए अंग्रेजी भाषा और सॉफ्ट स्किल्स का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। काबिल ट्रेनर्स के अभाव के कारण इन कौशल को फिजिकल प्रशिक्षण केन्द्रों के जरिये प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

आस्था का युग्मराग

आरती-आरता के प्रसंग

-डॉ. मालती शर्मा-

परंपरा के लोक में परिव्याप्त सृष्टि का युग्मराग मन-मस्तिष्क पर कुछ इतना गहरा पैठ गया है कि कथा, कहानी, गीत, नाट्य की एक पंक्ति अथवा कोई लोकोक्ति याद आते ही मन में उठती हिलोर के तार झनझना उठते हैं। हमारी परंपरा का लोक सृष्टि के युग्मराग के तारों से गुंथा है। हमारे भावना लोक को सृष्टि के साथ हाथ कंगन को आरसी बना दिया है। छोटे से छोटे रीति-रिवाज में जीवनचर्या के साथ प्रकृति की चर्या आ खड़ी होती है। लोकसंस्कारों के लोकाचारों के बाद अरता की विधियों की संरचना में जब घर के बाहर जीवन जल के झारे झमकेनु (झोंके झकोरों से) मेघ बरसते हैं तो सृष्टि का युग्मराग गतिमय, गीतमय हो उठता है।

मेरे मन में यह युग्मराग झनझनाया एक आकस्मिक संयोग से, भतीजे की 45वीं वर्षगांठ का 'आरता' करते हुए। मंदिरों तथा घरों में स्थापित देव-मूर्तियों की सायं-प्रात: एक से अधिक बार आरती करना देशभर में पूजा का अभिव्याज अंग है। गणेश चतुर्थी, कृष्ण जन्माष्टमी, महाशिवरात्रि, दीपावली पर पूज्य देवता की विशेष आरती होती है। मंदिरों में प्रात:काल की आरती के स्वर बजते घंटे घड़ियाल और शंख ध्वनि से मानव मन दिनभर के लिए सजग और क्रियाशील हो उठता है। सायंकालीन आरती दिनभर का दुख हर लेती है। राम की आरती सारे आर्त हरने वाली है। कहा भी है- हरति सब आर्ति आरती राम की।

महाकवि सूरदासजी ने तो पूरे विश्व को हरिजु की आरती की संरचना कहा है- हरिजू की आरती बनी।

इस आरती में सातों समुद्र घी और सारी वनस्पतियां बाती हैं। सूर का यह पद आरती की पूरी संरचना है। एक बहुत बड़े वैश्विक फलक का चित्र। वैसे आरती की पूरी संरचना का इतना बड़ा शास्त्र और लोकशास्त्र है कि उसके विवेचन को कई रूपों में देखा जा सकता है। आटा-माटी से लेकर सोना, चांदी, पीतल, स्टील के दीपक, बाती बत्तियों की कपास संख्या, घी, तेल, कर्पूर, धूर, आरती उतारने की संख्या, देवी-देवताओं, लोकदेवताओं, ग्राम देवियों की विभिन्न आरती, आरती के विभिन्न ढंग, गीत, गायकी, रचनालोक, आरती का वादन, नर्तन और आरती लेने देने वाले कितने ही पक्ष हैं। आस्था और श्रद्धा के समूह में कुछ आरती के दौरान अशरीरी विदेह हो जाते हैं। बेभान हो जाते हैं। बालिकाओं में आरती न जाने कब आरता बन गई। सांझी माई का आरता तो क्वार में बहुतायत से फूलती चमेली की बेल के फूल करते हैं जो बहू की आंखों में झिलमिलाते हैं-

आरता री आरता सांझी माई आरता
आरते फूल चमेली नु बेल
बौहरिया के नैन तो झलमल होय।

धर्म के पूजा-शास्त्र में जो आरती है, लोकजीवन में वह आरता है। आरता करने का गीत, आरता करने की संरचना की प्रक्रिया में मध्यकालीन ग्रामीण समाज व्यवस्था का दिग्दर्शन मिलता है। जन्म और परण के लोकाचारों, मुंडन लगुन, सगाई, तेल-हल्दी, घूरा पूजना, किसी मंगल प्रसंग, वर्षगांठ इत्यादि में जब उत्सव मूर्तियां चौक पर बैठती हैं तो लोकाचारों की विधियां पूरी होने पर अंत में आरता-आरती की जाती है। वह लगभग पूरे देश में सर्वमान्य लोक-रीति है। 'आरता' बहन-बुआ करती है। घूरे की पूजा का आरता मां, आरता करने को दीपक भी जरूरी नहीं, प्राय: पानी का लोठा पूजा की थाली में रख लिया जाता है। उत्सव मूर्तियों (बन्ना-बन्नी बच्चा जो भी हो) पर थाली घुमाते हुए यह आरता गीत गाया जाता है-

झारे झमकेनु बरसैगौ मेह
बूंद बुंदियन बरसैगौ मेह
झनकारेनु मादल बाजैगौ
तुम बैठो लड़िलड़े लड़िलड़ी चौक
तिहारी भानि बुआ, बहन करेंगी आरतो
बो तो बूझे अथइयां (चौपाल) के लोग
बेटी कहारे लाद्यौ आरतो ?
मैं तो लादी मोहर पचास
रूपय्या लादे डेड सै
पहिरायो दखिन को चीर
सिर गुजराती चूंदरी
जुग / चिर जीओ लड़िलड़े के बाप
मोय जिन पहिरायौ आरतो।

गीत के अंत में चौक के चारों कोनों पर लोठे से थोड़ा-थोड़ा पानी डाला जाता है। थाली में से चावल और फूल हों तो फूल वर्षगांठ पर तो होते ही हैं उत्सव मूर्तियों पर फैंके जाते हैं। मान्य को आरता कराई नेग दिया जाता है। तब उत्सव मूर्तियों का कोई घर की पुरखिन सिर हिलाती है जैसे सारी आधि-व्याधियां चौक की संरचना में रची दसों दिशाओं में झाड़ देती हैं। सृष्टि के युग्मराग को उसके अविनाशी तारों के स्वर को उत्सव मूर्तियों के मन मस्तिष्क में बसा देती हैं।

एयरसेल का विशेष रमजान पैक

उदयपुर। एयरसेल ने विशेष रमजान पैक पेश किया है जिसके तहत रात में वॉइस कॉलिंग सुविधा पर अधिक रियायती दरों के साथ टॉक टाइम पर विशेष लाभ दिए जा रहे हैं। एयरसेल के रीजनल मैनेजर वेस्ट अरविंदसिंह शेखावत ने बताया कि राजस्थान में एयरसेल की नई स्कीम 86 रूपये के आकर्षक दाम पर उपलब्ध है, जो इफ्तार के बाद ग्राहकों को प्रियजनों से आसानी जुड़े रहने का मौका देती है। इस स्कीम में 90 रूपये का फुल टॉक टाइम तथा रात 11 से सुबह 6 बजे तक 30 पैसे प्रति मिनट की दर से लोकल और एसटीडी कॉलिंग जैसी सुविधाएँ 21 दिनों की वैधता के साथ उपलब्ध है। यह पैक आईएसडी कॉलिंग पर भी महत्वपूर्ण छूट का ऑफर देता है जिससे संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के लिए कॉल दरें 16 पैसे प्रति सेकेण्ड और बांग्लादेश के लिए 4 पैसे प्रति सेकेण्ड तक घट जाती है। इफ्तार के बाद, लोकल, एसटीडी और आईएसडी कॉल्स के अधिक उपयोग को देखते हुए कम्पनी ने यह 'रमजान पैक' प्रस्तुत किया है।

अरविंदसिंह शेखावत ने बताया कि रमजान का पवित्र महीना हमारे ग्राहकों के लिए विशेष अवसर होता है जब वे भारत या विदेश में रह रहे अपने परिवार और मित्रों से बिना किसी बाधा के सम्पर्क में रहना पसंद करते हैं। हमने अनुभव किया है कि रमजान के दौरान खासतौर पर रात में कॉल वॉल्यूम बढ़ जाती है। इतनी रात में अधिकांश रिटेल स्टोर्स बंद रहते हैं। लिहाजा ग्राहकों के लिए अपने फोन बैलेंस में टॉप अप करवाना संभव नहीं हो पाता। यही कारण है कि हमें यह तर्कपूर्ण लगा कि साल के इस समय में रात्रि कालीन कॉल दरों को और भी सस्ता बनाया जाए, क्योंकि अपने ग्राहकों के लिए त्यौहार के इस समय को अधिक आनंददाई बनाना हम अपनी जिम्मेदारी समझते है।

श्रीराम ऑटोमॉल इंक और मणप्पुरम फायनेंस लि. में गठबंधन

उदयपुर। भारत में प्रीओन्ड वाहनों एवं उपकरणों के एक्सचेंज के नम्बर वन प्लेटफार्म श्रीराम ऑटोमॉल इंक ने मणप्पुरम फायनेंस लि. से गठबंधन किया है। इस गठबंधन से इसका लाभ इसके सभी प्रकार के प्री-ओन्ड वाहनों एवं उपकरणों की बिक्री पर मिल सकेगा। इसके तहत श्रीराम ऑटोमॉल मणप्पुरम फायनेस लि. के सभी सेगमेंट्स जिनमें प्री-ओन्ड कॉमशियल वाहन, निर्माण उपकरण, ट्रैक्टर्स, कार्स

और एसयूवीज, थ्री व्हीलर्स और दो पहिया वाहनों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। साथ ही सभी प्रकार के प्री-ओन्ड वाहन एवं उपकरणों की मल्टीपल बिडिंग प्लेटफॉर्म्स, जिनमें फिजिकल बिड़िंग, ऑनलाइन बिडिंग, वन स्टॉप क्लासिफाइड कियोस्क्स एवं निजी सौदों के लिए रणनीतिगत रूप से समर्पित रहेगा।

श्रीराम ऑटोमॉल इण्डिया लि. के सीईओ समीर मल्होत्रा ने कहा कि देश की शीर्ष वित्तीय संस्थान के साथ सम्बद्ध होकर बहुत अच्छा लग रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि हमारी पेशेवर सेवाएं एवं मालिकाना बोली प्लेटफॉर्म्स को कितनी अ%छी तरह से स्वीकार करते हैं। हमें विश्वास है कि यह गठबन्धन दोनों ही संस्थानों के लिए लाभप्रद रहेगा। मणप्पुरम फायनेंस लि. के ईवीपी एवं नेशनल हैड कमर्शियल व्हीकल फायनेंस के. शाथिल कुमार ने कहा कि हमारी निगाहें श्रीराम ऑटोमॉल की प्री-ओन्ड ऑटोमोबाइल क्षेत्र में विशेषज्ञताओं का लाभ उठाने पर है। एक सेवा प्रदाता के रूप में मणप्पुरम फायनेस लि. प्रत्येक वाहन का बाजार मूल्य प्रमाणित कर सकेंगे और निर्णय लेने की प्रक्रिया में पूरी मदद करेंगे।

डैट्सुन 'रेडी-गो' अर्बन-क्रॉस 2.44 लाख रु. में लॉन्च

उदयपुर। डैट्सुन ने भारत की पहली अर्बन-क्रॉस, डैट्सुन रेडी गो बाजार में उतारी है। इसका मूल्य 2,44,209 रु. से शुरु होता है। आधुनिकता, बेहतरीन परफॉर्मेंस एवं स्टाईलिश डिज़ाईन के साथ, डैट्सुन रेडी गो काफी किफायती मूल्य में पांच वैरिएंट्स में उपलब्ध है। वैरिएंट डी का उदयपुर में एक्स-शोरूम मूल्य 2,44,209 रुपये, ए का 2,88,930 रुपये, टी का 3,16,019 रुपये, टी (ओएस) का 3,26,497 रुपये एवं एस का 3,41,830 रुपये है।

लॉन्च के अवसर पर निसान मोटर इंडिया प्रा. लि. के वाईस प्रेजिडेंट सेल्स, नेटवर्क एंड कस्टम रिलेशन्स सतिंदर बाजवा ने कहा कि डैट्सुन रेडी गो के साथ हम जापान में डिज़ाईन की गई एवं भारत में विकसित और निर्मित की गई एक अद्वितीय अर्बन-क्रॉस ओवर पेश कर रहे हैं। डैट्सुन रेडी-गो काफी आकर्षक मूल्य में आ रही है और सपनों, पहुंच एवं भरोसे के डैट्सुन के सिद्धांत को मजबूत बना रही है।

डैट्सुन रेडी-गो में 'युकान' नामक नया जापानी डिज़ाईन है, जिसका अर्थ है, हिम्मती एवं साहसी। इसमें टॉल-ब्वॉय स्टाईलिंग दी गई है और इस श्रेणी में सबसे अच्छा 185 मिमी. का ग्राउंड क्लियरेंस, विशाल केबिन स्पेस है और ड्राईवर को शानदार एक्सटर्नल विज़िबिलिटी प्रदान की गई है। डैट्सुन रेडी-गो पांच आकर्शक बॉडी कलर्स व्हाईट, सिल्वर, ग्रे, रूबी एवं लाईम में उपलब्ध होगी।

वाहन चलाते वक्त पूरा आत्मविश्वास प्रदान करने के लिए नई डैट्सुन रेडी-गो में व्यापक सुरक्षा पैकेज- डैट्सुन प्रो-सेफ 7 दिया गया है। डैट्सुन प्रो-सेफ 7 में कई सुरक्षा समाधान जैसे सबसे कम ब्रेकिंग दूरी, झटकों को झेलने के लिए अत्यधिक मजबूत बॉडी शेल, सड़क का व्यापक व्यू और बेहतरीन विज़िबिलिटी, बेहतर सस्पेंशन सिस्टम एवं शानदार मैन्योवरेबिलिटी, मोड़ते वक्त अधिक बोल्स्टर सपोर्ट, एनर्जी एब्ज़ॉर्बिंग स्टीयरिंग एवं ड्राईवर एयरबैग शामिल किए गए हैं। डैट्सुन रेडी-गो 25.17 किमी. प्रति लीटर की शानदार माईलेज प्रदान करती है।

यह 0.8 एल थ्री-सिलेंडर आई-सैट इंजन एवं 5 स्पीड मैन्युअल ट्रांसमिशन से सुसज्जित है, जो मात्र 15.9 सेकंड में ही वाहन को 0 से 100 किमी./ घंटे की गति तक पहुंचा देता है। यह 140 किमी./ घंटा की सर्वाधिक गति से चल सकती है। इसका नया सस्पेंशन सिस्टम हैंडलिंग एवं राईड के कम्फर्ट के बीच बेहतरीन संतुलन स्थापित करता है।

डैट्सुन रेडी-गो में आकर्षक 2 साल / असीमित किलोमीटर की स्टैंडर्ड वॉरंटी है। इसमें एक और आकर्षक पहल की गई है, एवं यह निशुल्क रोडसाईड असिस्टेंस के साथ 2 या 3 साल / असीमित किलोमीटर की वैकल्पिक वॉरंटी के साथ आ रही है। इसके द्वारा रेडी-गो कार के मालिकों को 5 साल / असीमित किलोमीटर वॉरंटी कवरेज का विकल्प मिल रहा है। डैट्सुन रेडी-गो रखने का खर्च भी अन्य प्रतिद्वंदियों के मुकाबले 32 फीसदी कम है। स्टैंडर्ड और एक्सटेंडेड वॉरंटी, दोनों के साथ ही रोडसाईड असिस्टेंस की सुविधा निशुल्क प्रदान की जा रही है।

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

यात्रावृत्त

वेद और शास्त्र लोक की संतानें

-डॉ. दिपेंद्रसिंह जाड़ेजा

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की वृहद शोध परियोजना के तहत मैंने अप्रेल-2016 में राजस्थान की यात्रा की। यह यात्रा झीलों की नगरी उदयपुर से प्रारंभ करते हुए राजस्थानी साहित्य के अनेक विद्वद्जनों के साथ मुलाकात की। सबसे पहले लोकसाहित्य एवं लोकनाट्य परंपरा के मर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत से 'शब्द-रंजन' के कार्यालय में भेंट हुई। उनसे मेरी भेंट सुखाड़िया विश्वविद्यालय के डॉ. नवीन नंदवाना ने कराई।

डॉ. भानावत ने अपने विषय से संबंधित न सिर्फ सुझाव दिये अपितु इस कार्य में उपयोगी सिद्ध होने वाली किताबों एवं व्यक्तियों के नाम एवं संपर्क नंबर भी दिये। मुझे यह बात छू गयी जब उन्होंने कहा कि विद्वानों के लिए तो उनके पास समय ही समय है। उन्होंने कहा कि लोक साहित्य का अध्ययन लोगों के बीच जाये बिना नहीं हो सकता। लोकरंग की सही पहचान लोगों के मिलने से ही होती हैं। चित्तौड़गढ़ में डॉ. शिव 'मृदुल' ने बड़ी आत्मीयता से विस्तार से चर्चा की। चित्तौड़गढ़ में 10 से अधिक जगह नवरात्रि पर गरबा का आयोजन होता है। राजस्थानी लोकगीतों के वैविध्य के दौरान पथवारी गीतों पर चर्चा के दौरान उन्होंने अपने घर के पास निर्मित पथवारी के दर्शन कराये तथा महिलाओं द्वारा उसकी पूजा विधि भी समझाई। उन्होंने अपने भाई डॉ. रमेश 'मयंक' को भी बुला लिया। उन्होंने कुछ गीत गाकर सुनाये।

डॉ. भानावत से बतियाते डॉ. जाड़ेजा

जयपुर में प्रो. सत्यनारायण व्यास के घर पर उनकी धर्मपत्नी चन्द्रकान्ता तथा बेटी डॉ. रेणु व्यास के साथ हुई बातचीत ने विषय को और गहवारा। उन्होंने तो राजस्थानी लोकगीतों के रेकोर्डिंग तथा पुस्तकों का खजाना ही खोल दिया। डॉ. रेणु की मौसी से कई सारे लोकगीतों के साथ सुना कि जिस स्त्री के संतान नहीं है वह हनुमानजी (बालाजी) को भजती है- 'बालाजी उभी था'रा मंदिरिया के माहें सासूजी बोली तू गय्ये जनम की बाँजड़ी।' प्रो. व्यास ने अध्यापकीय शोध प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर बताया कि वेद से लोक ज्यादा महत्वपूर्ण है। वेद कितने भी महान हों किन्तु लोक से महान नहीं, क्योंकि वेद और शास्त्र तो लोक की संतानें हैं।

दूरदर्शन केन्द्र जयपुर के पूर्व निदेशक नन्द भरद्वाज से लोकसाहित्य में दूरदर्शन के योगदान की भूमिका को लेकर अच्छा वार्तालाप हुआ। उन्होंने विजय वर्मा से संपर्क कराया। वर्माजी के साथ लोकसाहित्य के विविध स्वरूपों को लेकर बातचीत होती रही। उन्होंने गुजराती लोकसाहित्य से संबंधित सामग्री एवं पुस्तकों के बारे में मुझसे जानकारी प्राप्त की।

बीकानेर में डॉ. किरण नाहटा से मिले। दूसरे दिन उनके साथ आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध संस्थान गये। उन्होंने राजस्थानी लोकसाहित्य की पुरानी पुस्तकें एवं पत्रिकाएं उपलब्ध करवाईं। डॉ. मुरारी शर्मा ने अपने घर पर ही राजस्थान और गुजरात के लोकगीतों के सांस्कृतिक पक्ष पर चर्चा का आयोजन रख लिया जिसमें मेरे साथ शेलत सोहिल, चेन्नई के पंडित जमनादास सेवग तथा श्रीडूंगरगढ़ के लोकगायक मोहम्मद रमजान थे। डॉ. शर्मा ने कहा कि शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सोरठ राग गुजरात की देन है। दोनों प्रदेशों की भौगोलिक स्थिति ने भी लोकगीतों को प्रभावित किया। संयोजक अशफाक कादरी ने बीकानेर में लोकगीतों के क्षेत्र में डॉ. मनोहर शर्मा तथा डॉ. जयचंद्र शर्मा के योगदान को रेखांकित किया।

मुरली मनोहर माथुर ने कहा कि लोकगीत और चित्रकला का गहरा रिश्ता है। कई ऐतिहासिक चित्रों में लोकगीतों के भाव सजीवता से प्रकट किये गये हैं। राजाराम स्वर्णकार ने लोकगीतों के संवेदन पक्ष पर तथा संचार माध्यमों में लोकगीतों की चर्चा की।

जोधपुर में डॉ. जयपालसिंह तथा महिपालसिंह राठौड़ ने लोकसाहित्य के अनेक विद्वानों से संपर्क कराया। इस यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि होली की रात में गाने-बजाने वालों को बुलाकर लोकगीतों के माधुर्य का रस पाना रहा। डॉ. विक्रमसिंह भाटी ने राजस्थानी भाषा-शोध-संस्थान से 'परंपरा' पत्रिका के सारे पुराने अंक उपलब्ध करवाये। 'माणिक' पत्रिका के संपादक जुगल परिहार ने अपने अमूल्य सुझाव दिये। प्रो. नन्दलाल कल्ला ने सम्पूर्ण लोकवांग्मय की परंपरा में लोकगीतों के अध्ययन को विविध कोणों से महत्वपूर्ण बताया।

इस प्रकार राजस्थान की मेरी इस यात्रा से दोनों प्रांतों के लोकगीतों की परंपराजन्य सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ी लौकिक-अलौकिक विरासत से जीवंत होने का अविस्मरणीय योग बना।

शब्द रंजन कार्यालय में जानेमाने शिक्षाविद् वीरचन्द मेहता

शब्द रंजन कार्यालय में जानेमाने रचनाकार शिव 'मृदुल'

फिटजी का डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम सबसे सफल

उदयपुर। 'उपेक्षितों तक पहुंच बनाने' और ग्रामीण क्षेत्रों तथा टियर 2 शहरों के छात्रों और नियमित क्लास करने में असमर्थ अभ्यर्थियों के लिए एक अनुकूल प्लेटफॉर्म देने के लक्ष्य के साथ आईआईटी-जेईई तथा कई अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने वाली प्रमुख संस्था फिटजी ने अपने डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम्स के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू कर दी है। इन प्रोग्राम्स में सर्वश्रेष्ठ क्वालिटी, पर्याप्त और आसानी से समझने वाले स्टडी मैटेरियल तथा प्रैक्टिस असाइनमेंट्स शामिल हैं।

फिटजी में नॉन क्लासरूम प्रोग्राम्स के प्रमुख अमित बंसल ने बताया कि समाज के पिछड़े क्षेत्रों के जो अभ्यर्थी आईआईटी में सफल तो होना चाहते हैं लेकिन सामर्थ्य के अभाव में ऐसा नहीं कर पाते हैं, उन्हें जेईई की सफलता के लिए सख्त प्रशिक्षण और मागदर्शन की जरूरत होती है। अपनी डिस्टेंस लर्निंग सीरीज के जरिये हम ऐसे अभ्यर्थियों की जरूरतों को पूरा करने का लक्ष्य रखते हैं जो क्लासरूम सीरीज में दाखिला नहीं ले सकते। ऐसे छात्रों तक हम खुद पहुंच बनाते हैं और उन्हें अपना मनोवांछित लक्ष्य पाने के लिए उनकी वास्तविक क्षमता एवं प्रतिभा निखारने में मदद करते हैं। कोई छात्र चाहे किसी भी संस्थान में दाखिला ले लेकिन उसकी पढ़ाई फिटजी डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम के बगैर पूरी नहीं होती है। इसका जीता-जागता प्रमाण जेईई एडवांस्ड 2016 की परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर के टॉपर अमन बंसल (एआईआर1), कुणाल गोयल (एआईआर3) और लड़कियों में टॉपर रिया सिंह का असाधारण प्रदर्शन है। इन तीनों छात्रों ने फिटजी के डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम का सहारा लिया था जबकि ये अलग-अलग संस्थानों से जुड़कर तैयारी की थी।

हाई-फाई हेयरकट पायें बिल्कुल मुफ्त

उदयपुर। हेयर एंड केयर की 300 मिली की प्रत्येक बोतल पर उपभोक्ता 500 रूपये की कीमत का एक फ्री हेयरकट पा सकता है। यह फ्री हेयरकट शहर के हाइ- फाइ सैलून्स जैसे कि वीएलसीसी, जावेद हबीब, एनरिच, नैचुरल्स तथा अन्य पर किया जायेगा। इस ऑफर का लाभ उठाने के लिये उपभोक्ता को 300 मिली की हेयर एंड केयर की बोतल खरीद कर इस पर अंकित कोड स्कैच कर, 7877733446 पर मिस कॉल या www.hairandcare.promoredemption.com पर लॉग ऑन कर कोड रजिस्टर करना होगा। ब्रांड प्रतिनिधि द्वारा कॉल करने पर उपभोक्ता को सुविधानुसार दिन, समय तथा स्थान पर एक अग्रणी सैलून में अप्वाइंटमेंट की जानकारी दी जायेगी। इस सर्विस को वीकेंड्स तथा सार्वजनिक छुट्टियों के दिन भी रिडीम कराया जा सकता है। बॉलीवुड अभिनेत्री और हेयर एंड केयर की ब्रांड ऐम्बेसेडर श्रद्धा कपूर, ने कहा कि मैं हेयर एंड केयर के साथ हमेशा स्टाइलिश नजर आती हूं और इस बार मुझे शानदार नया हेयरकट मिला है।

वण्डर सीमेण्ट में 131 युनिट रक्तदान

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. के तत्वावधान में 'विश्व रक्तदान दिवस' पर कम्पनी के अस्पताल में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसका शुभारम्भ कम्पनी के सयुक्त अध्यक्ष सी. एस. शर्मा, सहायक उपाध्यक्ष (मानव संसाधन एवं प्रशासन), एस. के. शर्मा एवं सहायक उपाध्यक्ष (भूमि) एन. के. सिंह ने गणपतिजी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर किया। शिविर में श्री सांवलियाजी राजकीय सामान्य चिकित्सालय, चित्तौड़गढ़ की ब्लड बैंक टीम के डॉ. एस. के. गारु, अरविन्द आमेटा, लक्ष्मणलाल शर्मा एवं मीट्ठूलाल धाकड़ ने अपना सहयोग प्रदान किया। शिविर में वंडर सीमेंट के अधिकारी, कर्मचारी, ठेकेदारों, श्रमिकों सहित कॉलोनीवासियों ने 131 युनिट रक्तदान कर इसको सफल बनाया।

इस अवसर पर सी. एस. शर्मा ने बताया की वण्डर सीमेण्ट लि. द्वारा यह तीसरा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया है। पिछले डेढ़ वर्ष में कंपनी द्वारा कुल 453 युनिट रक्तदान किया जा चुका है। इसके अलावा वंडर सीमेंट द्वारा आसपास के गांवों में साप्ताहिक स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाये जाते है। उन्होंने बताया कि वंडर सीमेंट द्वारा राजकीय स्वामी विवेकानन्द सामान्य चिकित्सालय, निम्बाहेड़ा में राजकीय वण्डर सीमेंट ब्लड बैंक निर्माणाधीन है और ग्राम रसूलपुरा में उप स्वास्थ्य केन्द्र के नये भवन का निर्माण कराया जा चुका है।

ब्रह्मचर्य से आम फला

ब्रह्मचर्य की शक्ति से सभी परिचित हैं। शास्त्रों में ऋषि-मुनियों तथा संत-महात्माओं के ब्रह्मचर्य के प्रभाव के अगणित किस्से कहानी मिलते हैं।

ऐसी ही एक घटना महाराणा फतहसिंह के समय उनके समोर बाग में घटी जब कई आम्र वृक्षों के बीच एक आम्र वृक्ष अफलित रहने के कारण महाराणा ने काटने का आदेश दिया लेकिन बाग के माली को वृक्ष काटना अपराधिक प्रवृत्ति लगा फलस्वरूप वह कोई न कोई उपाय ढूंढ़ता रहा।

उन दिनों पंजाब के जैन स्थानकवासी संत मायाराम का उदयपुर प्रवास था। वे प्रति सुबह समोरबाग के रास्ते से शौचादि निवृत्ति के लिए दूधतलाई की ओर गमन करते। जैन संस्कारों से भलीभांति परिचित माली उन्हें विधिपूर्वक वन्दना करता और उनसे मंगलिक भी सुनता।

डॉ. दिलीप धींग ने मुझे बताया कि एक दिन मुनि मायाराम ने माली को उदास स्थिति में देख कारण जानना चाहा। माली ने बताया -''गुरूदेव, इस बाग में जितने भी आम के पेड़ हैं वे मेरे दादा, परदादा, पिता और स्वयं मेरे तथा मेरी घरवाली के लगाये हुए हैं। मैं अपने बच्चों से भी अधिक इनकी परवरिश पर ध्यान देता हूँ। सभी पेड़ लड़ालूम फल दे रहे हैं किन्तु एक पेड़ ऐसा है जो बांडा है, निफला है। घूमते घामते राणा साहब की उस पर नजर पड़ गई तो उन्होंने उसे काट फैंकने का आदेश दिया जो मेरी चिंता का कारण बना हुआ है। आप कृपाकर कोई ऐसा चमत्कार दें जिससे आम भी सुरक्षित रह जाय और उसके फल लगने लग जायें।''

मुनि मायाराम माली की पीड़ा समझ गये। वे आगमों और कई धर्मशास्त्रों के बड़े जानकार तथा गहन अध्येता थे। उन्होंने माली को आशान्वित करते हुए कहा-''तुम्हें और तुम्हारी धर्मपत्नी दोनों को 6 माह के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना पड़ेगा। इस काल में दोनों का शयन भी उस वृक्ष के नीचे रहेगा।''

माली और उसकी पत्नी ने मुनिजी से ब्रह्मचर्य व्रत के सौगन लिए और संकल्प के अनुसार वे पूरे छह माह उस वृक्ष के नीचे सोये। जब बसंत ऋतु का आगमन हुआ तो उस आम के लड़ालूम मंजरियां फूटीं और वह फल से लद गया।

माली दम्पत्ती अतीव प्रसन्न हुए। उन्होंने महाराणा सा. को यह शुभ समाचार दिया। इससे जैनसंतों के प्रति महाराणा फतहसिंह अधिक आस्थावान हुए। उन्होंने मुनि-दर्शन किये और पुनः उदयपुर पधारने की विनती की।

पृष्ठ दो का शेष

(विष्णु प्रभाकर : सच्चे.....)

इसके लिए गद्य सशक्त हथियार नहीं हो सकता था। कविता है-

दिनांक : 21.1.1991

प्रिय बंधु,

आकाश छोटा हो गया है
धरा हट रही है, अपनी धुरी से
दिशाएं दिशाहीन हैं
और सूर्य भटक गया है
गहन अंधकार में।
ऐसे मांगलिक अवसर पर
अपने-अपने स्वर्णिम रथों पर
सवार होकर
निकल पड़े हैं विजय यात्रा पर
राजनेता अपने
शौर्य का प्रदर्शन करने।
प्रमाण स्वरूप छोड़ते जा रहे हैं वे
नरमुंडों की मालाएं
और रक्त के सरोवर
और उनके पक्षधर
गूंजा रहे हैं महाशून्य को
गगनभेदी शंखनाद से।
तब क्यों निर्लज्जता बिलख रही है
सर पटक-पटक कर
भारत महासागर के तटबंधों पर।
जवाब है इस प्रश्न का
आपके पास?
इनके पास, उनके पास
किसी के भी पास?
प्रयत्न करो, उत्तर मिलेगा।

स्नेही
विष्णु प्रभाकर

कहना नहीं होगा कि प्रभाकरजी जैसे सहज सहृदय और सरल अपने लेखन में थे वैसे ही जीवन में भी थे। उन्होंने अपने लेखन में आजादी के आंदोलन से लेकर आजाद भारत के बाद के यथार्थ जीवन को अपने अनुभवी विचारों से बखूबी जीवंतता दी और साहित्य की उपन्यास, कहानी, यात्रा, संस्मरण, नाटक, जीवनी जैसी सभी विधाओं को भरपूर यशस्वी बनाया।

उन्होंने अनुभवों का श्रृंखलाबद्ध कलात्मक जीवन जिया और किसी विचारधारा से नहीं बंधे। भारतीय समाज के आस्थामूलक जीवन की धड़कनों में स्वांस लेते हुए उन्होंने अपने लेखन में उन संवेदनाओं को खोजा जिनसे अभावग्रस्त जीवन भी अपनी समता में उल्लसित बना रहता है।

प्रभाकरजी का प्रारंभिक जीवन बड़े अभावों और संघर्षों से जूझनेवाला रहा किंतु बाद के जीवन में भी वे अपनी धरती की धूल-माटी की महक लेते रहे। वे सच्चे और सहज जीवन के सारथी थे।

ऐसा था मेरा बचपन

-देवीलाल सामर-

प्रख्यात लोककलाकार देवीलाल सामर ने सन् 1952 में उदयपुर में भारतीय लोककला मंडल की स्थापना कर पूरे देश में लोककलाओं के उन्नयन, विकास, सर्वेक्षण, अध्ययन, प्रदर्शन तथा प्रयोग का बीड़ा उठाया। उन्हीं के प्रयासों से सर्वाधिक राजस्थान की लोकधर्मी कलाओं की विश्वख्याति बनी। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डॉ. महेन्द्र भानावत के संपादन में गेहरो फूल गुलाब रो नामक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित हुआ। सामरजी ने अपने बचपन के ये संस्मरण 'पीछोला' के लिए लिखे थे जिनका प्रकाशन 15 नवम्बर 1979 को किया गया।

मेरे माता-पिता मुझे बचपन में ही छोड़कर मर गये। मेरा सारा लालन-पालन मेरे मामा के घर हुआ परंतु वे थे पिछड़े ख्यालों के। मैं स्कूल अवश्य जाता, परंतु उसमें सिवाय किताबी पढ़ाई के कुछ नहीं होता था। मेरा कलाकार मन यह सब कैसे बर्दाश्त करता। मैंने लुकछिपकर उन लोगों का साथ पकड़ लिया जिनके घर गाने-बजाने की परंपरा थी। मैं छिप-छिपकर गाने लगा। मेरे साथी कहते थे कि मेरा गला बहुत अच्छा है और गाते समय टेबुल-डेस्क पर ताल भी मैं बहुत अच्छी लगाता हूं। क्लास में मास्टर साहब के आने से पूर्व हम यही काम किया करते थे। कभी-कभी पकड़े जाने पर हमारी पिटाई भी खूब होती थी।

उन्हीं दिनों उदयपुर के मीठारामजी के मंदिर के अहाते में मथुरा से रामलीला आया करती थी और लगभग महीने भर तक उसका कार्यक्रम चलता था। उस समय कोई दूसरी सांस्कृतिक प्रवृत्ति यहां नहीं थी। जो कुछ भी कलात्मक क्रियाकलाप होते थे वे उदयपुर के महाराणा साहब के इर्दगिर्द होते थे जिन तक साधारणजन की कोई पहुंच नहीं थी, देखने चला जाता था।

मेरी नानी मुझे बहुत प्यार करती थी। मामा मेरे पर कड़ी नजर रखते थे और मेरी गलतियों पर मारते भी बहुत थे। मैं रामलीला देखकर देर रात तक घर लौटता। जब मामा पूछते कि बापू कहां गया है तो नानी कह देती कि मैं उसके पास ही सोया हुआ हूं। मेरी नानी अपने सिरहाने एक लोठा रखती थीं और तकिये आदि से उपक्रम करती कि जैसे लोठा मेरा सिर और तकिया मेरा शरीर परंतु यह भेद भी एक दिन खुल ही गया और मेरी भयंकर पिटाई हुई। फिर भी मैं स्कूल जाने का बहाना बनाकर रामलीला के कलाकारों से मिलता। इनमें प्रख्यात नर्तक छन्नुभाई से मेरी गहरी दोस्ती हो गई। उन्होंने मुझे कई गाने और नाच सिखला दिये।

जब स्कूल की गैरहाजरी की बात मेरे मामा के कानों तक पहुंची तो मेरी कसकर पिटाई हुई। इससे घबराकर मैं रामलीला दल के साथ भाग कर नाथद्वारा पहुंच गया। वहां मुझे सखियों का काम करने का मौका मिला परंतु मैं अधिक दिनों तक यहां नहीं टिक सका। उदयपुर की पुलिस पता लगाते-लगाते वहां पहुंची और मैं उदयपुर ले आया गया। उसके बाद मुझ पर बड़ा नियंत्रण रखा जाने लगा। फिर भी मेरा कलाप्रेम जारी रहा। मैंने स्वयं अपने मुहल्ले में बच्चों की एक रामलीला मंडली बनाई। मुकुट, मुखौटे, वेशभूषा भी हमने ही बनाई। रात को छिप-छिपकर रामलीला करते परंतु यहां पर भी हमारे परिवार ने व्यवधान डाला। उदयपुर में उन दिनों कृष्णलीलाएं भी प्रतिवर्ष आती थीं। उनके प्रदर्शन के प्रमुख स्थल थे श्रीनाथजी की हवेली, बाईजीराज का कुंड तथा जगदीश मंदिर। इन कृष्णलीलाओं ने भी मुझे बहुत आकर्षित किया।

उन दिनों उदयपुर में स्काउटिंग का बड़ा जोर था। बारह वर्ष की उम्र में मैं भी स्काउट बन गया। स्काउटिंग की नियमित गतिविधियों के अलावा यहां खेलकूद, कैम्प, गायन, कैम्पफायर भी बहुत होते थे। दो-तीन वर्ष स्काउटिंग में बिताने के बाद मैं पढ़ने के लिए काशी चला गया। वहां मुझे खूब छूट मिल गई। मैं पढ़ाई से अधिक कला में शौक रखता था परंतु पढ़ाई में भी कमजोर नहीं था। वहीं मुझे नाटक में शौक लगा और मैं इतना प्रवीण हो गया कि काशी में स्थित कोरंथियन थियेटर के मालिक मेरे काम से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने मुझे रात को अतिरिक्त भूमिकाओं के लिए दो रूपया प्रति रात्रि के पारिश्रमिक पर अपनी कंपनी में भर्ती कर लिया। दिन को मैं पढ़ता और रात को नाटक में काम करता।

जब कभी छुट्टियों में मैं उदयपुर आता तो यहां के स्काउट आश्रम में नाटक किया करता। सबसे पहले जब मैंने उदयपुर में नाटक शुरू किया तो मेरा बहुत विरोध हुआ। घर के लोगों की नाराजगी से बचने के लिए हम स्काउट आश्रम में ही छिपे रहते। वीर अभिमन्यु व भीष्म जैसे एक-एक कर कई नाटक मंचित किये। सन् 1927, 28, 29 तक यहां नाटकों की चौदह मंडलियां बन गईं।

सौलह वर्ष की उम्र में उनका विवाह उदयपुर में ही बलवंतसिंहजी मुर्डिया की पुत्री जतनबाई से कर दिया। जतनबाई का लोककला, संस्कृति तथा सामरजी के कार्य-कर्म से कोई सरोकार नहीं था। वह नितांत धार्मिक तथा तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़ी साधिका थी। साधु-संतों के दर्शन करना, उनके सान्निध्य में धर्मोपदेश सुनना, व्रत उपवास करना, तपाराधना में लीन रहना ही उनका अभीष्ट था।

पीआईएमएस में नवजात को मिला जीवनदान

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस),हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों व नर्सिंगकर्मियों ने एक नवजात शिशु को नया जीवनदान दिया है। पीआईएमएस के वाइस चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि लसाड़िया (उदयपुर) निवासी देवीलाल के डेढ़ महिने के पुत्र लक्ष्मण को मां के गंभीर बीमार होने पर दूध नहीं मिलने के कारण कुपोषण, इंफेक्शन और किडनी पर प्रभाव के चलते गत 30 मई को दिनों गंभीर हालत में पीआईएमएस में लाया गया। परिजनों ने बच्चे के जीने की आस भी छोड़ दी थी। पीआईएमएस में बच्चे को भर्ती कर डॉ. विवेक परासर, राहुल खत्री एवं उनकी टीम ने तुरंत उपचार शुरू किया। धीरे-धीरे बच्चे का इंफेक्शन खत्म हुआ और किडनी भी पूर्ववत कार्य करने लगी है। बच्चे को जब भर्ती किया गया था तब उसका वजन 1.6 किलो था और अब उपचार के दौरान वजन बढ़कर 2.6 किलो हो गया है। चिकित्सकों के अनुसार बच्चा अभी स्वस्थ है फिर भी ऐतियाहतन पूर्णतः स्वस्थ होने पर ही उसे अस्पताल से डिचार्ज किया जाएगा।

कान्यो मान्यो

सबद-सबद रो फैर

कान्यो इन दिनों पाण पर चढ़ा हुआ है। टप-टप पसीना चूने पर भी उसका ज्ञान-भ्रमण कम नहीं हुआ है। जहां भी जाता है, कुछ न कुछ नई चीज लाता है। नई जानकारी देता है। लोगों की आदत पर नजर रखता है और आलतू-फालतू के जीवन जीने वालों को शब्दायीत करता है।

उसने बताया कि दादी पहले चूल्हे पर आग बुझने नहीं देती थी। जले हुए छाणे (उपले) को राख से ढक दिया जाता। उससे जो गर्मास बनी रहती उसे भोभर कहते। उस भोभर में लहसुन का गांठिया दबा देती। कुछ समय बाद वह सीक जाता तब लहसुन की कलियां छिल-छिल कर खाते। उसका मीठा स्वाद पेट में पहुंचता जिससे खांसी मिट जाती। उस भोभर में सकरकंद तक पकाया जाता। कवियों ने 'भोभर सोई आग कठा तक छानी मानी रैसी, भळको करै, उजाळो मेलै, ज्यूं-ज्यूं छेड़ै बैसी' का प्रयोग अंग्रेजों के विरूद्ध जनचेतना के संदर्भ में किया है।

मान्यो मान गया, कान्यो का कमाल। कहने लगा, कान्यो कम्प्यूटर के कुत्ते जैसा खोजक है। कह रहा था कि बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनका स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं है किंतु वे जब सार्थक शब्दों के साथ जुड़ जाते हैं तो उसका अर्थ-गांभीर्य बना देते हैं। जैसे कुछ रंगों के साथ उनका जुड़ाव उस रंग को और अधिक गाढ़ा बताने का अर्थ-बोधक बना देता है जैसे लाल रंग के साथ चट्ट, काले के साथ कट्ट, गोरे के साथ गट्ट, सफेद के साथ झक्क, अंधेरे के साथ गुप्प, हरे के साथ कच्च, कड़वे के साथ थू, खट्टे के साथ स्यू, रूड़ो के साथ रूफाळो। दीवालिया के पूर्व फटक। मान्यो सुनता रहा। कान्यो को भी न जाने क्या सत चढ़ा कि खजाना खोलता ही रहा। बोला, उत्तम, मध्य तथा निम्न स्तर के बोधवाचक शब्द भी कई हैं जैसा जूता, जरबा, खारड़ा। नामों में जैसे चतरभुज, चतरभज्यो, चतर्‌यो। कमलाबाई, कमली, कमल्टी। दो वर्गी नामों में जेठालाल से जेठ्‌या, नाथूलाल से नाथ्या, रामसिंह से राम्या, शेषमल से सेंस्या, पूनमचंद से पून्या, महेंद्रसिंह से मेंदर्‌या, ताराचंद से तार्‌या, प्रतापमल से परतापा, पृथ्वीराज से परथ्या। मान्यो मुळकता रहा। अंत में उससे रहा नहीं गया। बोला, अब ढबजा, बेटा का बाप। सारो खजानो आज ही खाली कर देगा तो काले कई थारी शकल देखबू करूंगा।

कामधेनु द्वारा नकलचियों पर कार्यवाही

उदयपुर। मेसर्स रघुवीर मेटल इंडस्ट्रीज लिमिटेड रजि लक्ष्मीनगर दिल्ली और ग्राम बिडिक्चयावास, मंगलियावास के पास, नसीराबाद रोड़, अजमेर, राजस्थान, अवैध रूप से कामधेनु लिमिटेड के ट्रेडमार्क और व्यापार चिन्हों का उपयोग करके बाजार में घटिया किस्म के टीएमटी सरिया और इस्पात से संबंधित उत्पाद विक्रय कर रहा है। जिसके खिलाफ कामधेनु लिमिटेड द्वारा दिल्ली जिला न्यायालय में ट्रेडमार्क और कॉपीराइट नियम 2016 के टीएम 34 के तहत मुकदमा दायर किया गया है। इसके तहत माननीय न्यायालय द्वारा दिनांक 09-06-2016 के आदेशानुसार मेसर्स रघुवीर मेटल इंडस्ट्रीज लिमिटेड पर रोक लगा दी गई है और इससे जुड़े सभी पक्ष जैसे प्रोपराइटर, निदेशक, एजेंट, वितरकों, प्रतिनिधियों, उत्तराधिकारियों द्वारा अगर कामधेनु के ट्रेडमार्क और पहचान चिन्ह अवैधानिक व भ्रामक तरह से उपयोग करके टीएमटी सरिया या इस्पात उत्पादों बेचा जाता है या विज्ञापन किया जाता है तो कानूनी तौर पर उत्पादों को जब्त कर कार्यवाही की जायेगी।

कामधेनु लि. का ट्रेडमार्क व पहचान चिन्ह अधिनियम के तहत इन सभी छह वर्गों में 717214, 842704, 853413, 872188, 1184260, 1508429, 1508433 पंजीकृत है। कामधेनु लि. का लेबल भी भारतीय कॉपीराइट अधिनियम 1957 के नं. ए-58058/2000 और ए-58100/2000 के तहत कलात्मक कार्य के रूप में पंजीकृत है और पंजीकृत कार्यालय मेसर्स कामधेनु लि., एल-311, स्ट्रीट नं. 7, महिपालपुर एक्टेंसन, नई दिल्ली और कॉर्पोरेट कार्यालय बिल्डिंग नं. 9 ए, द्वितीय तल, डीएलएफसाइबर सिटी, फेस 3, गुड़गांव, हरियाणा है।

हमारे पास

शब्द-रंजन है

अर्थ-रंजन नहीं

आपके पास जो भी है

कृपया सहयोग करें।

-डॉ. तुक्तक भानावत-

मो. 9414165391

देश रक्षा के लिए युवा पीढ़ी संकल्पित हो : डॉ. प्रणव पंड्या

उदयपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रणव पंड्या ने देशवासियों से भारत देश को कमजोर करने वाली विघटनकारी ताकतों को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए समर्पित भाव से आगे आने का आह्वान किया और कहा है कि इसके लिए अन्त:शक्ति को जागृत करते हुए राष्ट्र की सुरक्षा के लिए संकल्प शक्ति का परिचय देना होगा। श्री पंड्या उदयपुर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय सभागार में अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं योग समिति (सुविवि) की ओर से आयोजित 'हम करें राष्ट्र आराधन' विषयक समारोह को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने युवा पीढ़ी का आह्वान करते हुए कहा कि देश की मौलिक संस्कृति, महापुरुषों के सद्‌चरित्र एवं आदर्शों को आत्मसात करते हुए देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए साहसी समर्थ एवं गौरवशाली बनाने का संकल्प लें। उन्होंने महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे, तांत्या टोपे की देशभक्ति के कई उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि राष्ट्र की रक्षा से बड़ा कोई दायित्व नहीं हो सकता। आज की युवा पीढ़ी को नशाखोरी, भ्रष्टाचार और अलगाववादी ताकतों के चंगुल से बचाने के लिए उनमें राष्ट्र भावना, स्वाभिमान एवं सुसंस्कारों का संचार करने की महती आवश्यकता है।

डॉ. पंड्या ने महाराणा प्रताप के मातृभूमि के लिए सिंहासन का मोह छोड़ मेवाड़ को स्वाधीन रखने के संकल्प को ऐतिहासिक उदाहरण बताया और कहा कि प्रताप को द ग्रेट बोला जाना चाहिए। आज हर व्यक्ति को देश की रक्षार्थ स्वार्थ से ऊपर उठकर महाराणा प्रताप बनने की जरूरत है। डॉ. पंड्या ने कहा कि भारत को सर्वसम्पन्न बनाने के लिए आराधन, विज्ञान, सद्‌ज्ञान एवं शोध को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा-विद्या, सभ्यता एवं संस्कृति से समन्वय आधारित विश्वविद्यालय स्थापित कर ज्ञान का उजास सर्वत्र फैलाने की बात कही। उन्होंने कहा कि सशक्त राष्ट्र के लिए ज्ञान, शौर्य, समृद्धि एवंश्रम प्रमुख आधार है, युवा पीढ़ी को आराम, हरामखोरी एवं कामचोरी से बचते हुए स्वयं को पुरुषार्थी बनने का संकल्प लेना होगा।

गायत्री परिवार प्रमुख ने गायत्री परिवार को ओर से गंगा शुद्धि महाभियान का हवाला देते हुए बताया कि विगत तीन वर्षों से यह अभियान 10 लाख कार्यकर्ताओं के सहयोग से अनवरत चलाया जा रहा है। देश की उन नदियों को भी साफ करना होगा, जिनका पानी गंगा में जाकर मिलता है। आगामी 10 वर्षों में गंगा नदी को पूर्ण निर्मल करने का संकल्प लेकर चल रहे हैं। डॉ. पंड्या ने बताया कि विश्व गायत्री परिवार के माध्यम से आगामी 10 वर्षों में दिव्य युवा भारत संगठन के सहयोग से 5 से 10 करोड़ वृक्ष लगाने के संकल्प के साथ कार्य किया जा रहा है। डॉ. पंड्या ने कहा कि भारत में पुरातन मूल्यों को लौटाकर पुन: विश्व गुरु बनाने के लिए समयदान, अंशदान, साधनदान, विभूतिदान एवं ज्ञान के दान का संकल्प हर जागरूक नागरिक को लेने की महती आवश्यकता है।

समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि गीता, गायत्री, गौ, गंगा व गांव के संरक्षण और संवर्द्धन से ही देश व विश्व समृद्ध हो सकता है। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आई. वी. त्रिवेदी ने कहा कि युवा पीढ़ी पर देश की बागडोर निर्भर है ऐसे में सही दशा व दिशा के लिए युवा शक्ति को आत्मनिरीक्षण कर देशहित में आगे आने की जरूरत है।

नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि हमारी पुरातन संस्कृति का लोहा पूरा विश्व मानता है। उसे अक्षुण्ण बनाने का संकल्प लेने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि स्मार्ट सिटी उदयपुर के चहुँमुखी विकास के लिए 316 करोड़ का बजट प्रावधान निगम ने किया है। आगामी कार्यों के लिए 1500 करोड़ और मिलेंगे जिससे शहर का कायाकल्प हो जाएगा।

प्रारंभ में अतिथियों का तिलक, पगड़ी एवं मालाओं से स्वागत किया गया। आभार योग समिति के अध्यक्ष डॉ. विनोद अग्रवाल ने जताया। संयोजन डॉ. आलोक व्यास ने किया। स्वागत उद्बोधन सत्य चतुर्वेदी ने दिया। समन्वयन ललित पानेरी एवं श्रीमती पुष्पा पानेरी का रहा।

समारोह में भगवतीलाल चौबीसा, दीपेन्द्रसिंह चौहान, ओमप्रकाश पारीक, दिनेश पटेल, विजयलक्ष्मी चतुर्वेदी, मयूर शाह, सूरज प्रसाद शुक्ला, सुषमा जोशी, पद्मा व्यास, औंकार पाटीदार, बसंत यादव, नारायण रघुवंशी, मनोरंजन प्रधान, संतोष सिंह, नरेन्द्र पाटीदार, प्रतापसिंह राव, महेन्द्र शर्मा, राजेन्द्र त्रिपाठी, दिलीप पानेरी, अश्विनी सहित समूचे राज्य से आए गायत्री परिवार सदस्य एवं प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

इससे पूर्व उदयपुर पहुंचने पर डॉ. प्रणव पंड्या की गायत्री परिवार कार्यकर्ताओं ने अगवानी की। वे सर्वऋतु विलास स्थित गायत्री शक्तिपीठ पहुंचे। उन्होंने वहां नवनिर्मित अतिथि गृह का लोकार्पण किया। उन्होंने सेक्टर 4 स्थित शक्तिपीठ में पंडित श्रीराम शर्मा द्वारा रचित सद्‌साहित्य पुस्तकालय का भी शुभारंभ किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।